हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 16 नवंबर 2025

11 ग्रामीण सफाई कर्मचारियों ने मांगों को लेकर विधायक...

12 अटेली व कनीना मार्केट कमेटी चेयरमैन...

राज्यस्तरीय महाराजा शूर सैनी जयंती समारोह आज

सीएम नायब सिंह सैनी करेंगे 83.70 करोड़ की 19 परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सैनी सभा की ओर से रविवार प्रदेश स्तरीय महाराजा शूर सैनी जयंती समारोह नई अनाज मंडी में होगा। इसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि होंगे। प्रशासन ने इसकी तैयारी पूरी की है। इस दौरान सीमए जिला के लिए लगभग 83.70 करोड़ रुपये की 19 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। समारोह में प्रत्येक जिले से बसों में आने वाले नागरिकों के लिए समारोह स्थल के नजदीक ही पार्किंग की व्यवस्था की गई है। किसी भी मेहमान को कोई परेशानी ना हो, इसके लिए प्रत्येक कार्य के लिए नोडल अधिकारी लगाए गए है। मुख्य मंच के अलावा वीआईपी के लिए एक और मंच भी बनाया गया है। इसके अलावा एक बड़ा मंच सांस्कृतिक टीमों के लिए भी तैयार किया गया है।

नारनौल। सीएम के स्वागत के लिए तैयार पंडाल। फोटो :हरिभूमि

इन परियोजनाओं का होगा शिलान्यास व उद्घाटन

उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार ने बताया कि सीएम कार्यक्रम स्थल से ही जिला मुख्यालय नारनौल में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 3595.65 लाख की लागत से तैयार 110 आवासों का उद्घाटन करेंगे। इसी प्रकार लगभग 656.41 लाख की लागत से तैयार ट्रॉमा सेंटर नारनौल, 280.25 लाख की लागत से तैयार महिला थाना से गर्ल्स आईटीआई तक सड़क निर्माण और सौंदर्यीकरण के कार्य, 234.76 लाख रुपये की लागत से तैयार नारनौल शहर में दो पार्कों के निर्माण कार्य, नांगल चौधरी में 228.47 लाख रुपये की लागत से 3 बे बस स्टैंड का, 116.25 लाख की लागत से तैयार नारनौल में महिला थाना से अग्रसेन चौक तक सड़क कार्यों का, राजकीय कॉलेज अटेली में 100 लाख की लागत से तैयार प्रशासनिक खंड का निर्माण कार्य, 90.41 लाख की लागत से तैयार नारनौल शहर के चितवन वाटिका में पार्क का निर्माण, 71.81 लाख रुपये की लागत से तैयार वार्ड नंबर 13 नारनौल में सती माता मंदिर के पास पार्क का निर्माण, 40.29 लाख रुपये की लागत से तैयार आजमाबाद मोखूता में जीवीएच का निर्माण, 35.83 लाख रुपये की लागत से तैयार मेघोत हाला में जीवीएच का निर्माण, 35.83 लाख रुपये की लागत से तैयार कमानियां में जीवीएच का निर्माण, 32.58 लाख रुपये की लागत से तैयार झूक में जीवीडी का निर्माण, 31.11 लाख रुपये की लागत से तैयार खेड़ी में जीवीडी का निर्माण व 31.11 लाख रुपये की लागत से तैयार ढाणा में जीवीडी निर्माण कार्य का उद्घाटन करेंगे। उन्होंने बताया कि लगभग 2789.23 लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाली चार परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे। लगभग 2113.94 लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाली पीडब्ल्यूडी (बीएंडआर) - सड़क परियोजनाएं फैजाबाद-सीहमा-कनीना सड़क (एडीआर-127) का सुधार कार्य का शिलान्यास करेंगे। इसी प्रकार राजकीय कॉलेज अटेली में लगभग 442 लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाले विज्ञान खंड का निर्माण कार्य, 193 लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाली रेवाड़ी-नारनौल सड़क (एनएच-11 से छलक नाला तक) के शहरी हिस्से का सुधार कार्य व 40.29 लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाले महेंद्रगढ़ में गौशाला (जीवीएच) डुलाना का निर्माण कार्य का शिलान्यास करेंगे।

रैली में विनम्र व सहयोगपूर्ण व्यवहार करें पुलिस कर्मी

नई अनाज मंडी में आयोजित होने वाले महाराजा शूर सैनी जयंती के राज्य स्तरीय समारोह की सुरक्षा और सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद है। इसी क्रम में शनिवार एसपी पूजा वशिष्ठ ने पुलिस लाइन नारनौल में सभी पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की एक महत्वपूर्ण ब्रीफिंग ली और उन्हें ड्यूटी संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एसपी ने कहा कि वे अनुशासन में रहकर अपनी ड्यूटी का निर्वहन करें और समारोह स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखें। उन्होंने जोर देकर कहा कि आम जनता के साथ विनम्र और सहयोगपूर्ण व्यवहार किया जाए, जिससे पुलिस और नागरिकों के बीच बेहतर संबंध स्थापित हो सके। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी पुलिसकर्मी पूर्ण वर्दी में उपस्थित रहें। यातायात प्रबंधन के तहत, सभी वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थलों पर ही खड़ा करवाया जाए और सड़कों पर कहीं भी अव्यवस्था न होने दें। उन्होंने स्पष्ट किया कि ड्यूटी के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी और पुलिस की छवि को धूमिल करने वाला कोई भी कार्य न किया जाए।

खबर संक्षेप

ट्रेन की चपेट में आने से बुजुर्ग की मौत

नारनौल। अटेली से काठुवास लाइन के बीच ट्रेन की चपेट में आने से एक 65 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। मंडी अटेली कस्बा के रहने वाले करीब 65 वर्षीय अमर सिंह को कम सुनाई देता था। बीते कल वह रेलवे लाइन को पार कर अपने खेतों में जा रहे थे। इस दौरान अज्ञात ट्रेन की चपेट में आ गए। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जीआरपी चौकी नारनौल को जब इसकी सूचना मिली तो पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लिया तथा उसकी शिनाख्त की तो मृतक की पहचान अटेली निवासी अमर सिंह के रूप में हुई। जिसके बाद पुलिस ने नारनौल के नागरिक अस्पताल से मृतक का पोस्टमार्टम कराया।

अज्ञात महिला की ट्रेन की चपेट में आने से मौत

मंडी अटेली। दिल्ली मुंबई फ्रेट कॉरिडोर पर एक करीब 35 वर्षीय अज्ञात महिला ट्रेन की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई। इंस्पेक्टर कैलाश शर्मा के अनुसार घटना लगभग दोपहर तीन बजे पोल नंबर 1298/14/16 के पास हुई, जब न्यू डाबला से न्यू अटेली जा रही ट्रेन से दुर्घटना हुई। सूचना मिलते ही जीआरपी टीम मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नारनौल मोर्चरी हाउस भिजवा दिया। महिला की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है।

विधायक ने नारियल फोड़कर किया शुभारंभ

सीवरेज समाधान के लिए एक बड़ी, दो छोटी नई मशीन मिलीं

जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने शुरू की तीन नई मशीनें

सीवरेज की समस्या के समाधान के लिए एक बड़ी तथा दो छोटी मशीनें मिली हैं, इससे सीवरेज जाम की समस्या का होगा त्वरित समाधान, बड़ी जेटिंग मशीन 41 लाख रुपये तथा छोटी दो मशीनों पर खर्च किए गए हैं 29 लाख रुपये

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। नारियल फोड़कर मशीन का शुभारंभ करते विधायक कंवर सिंह। फोटो: हरिभूमि

जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग को शहर में सीवरेज की समस्या के समाधान को लेकर एक बड़ी तथा दो छोटी मशीनें मिली हैं। अब शहर में सीवरेज जाम की समस्या का त्वरित समाधान होगा। बड़ी जेटिंग मशीन पर विभाग की ओर से 41 लाख रुपये तथा छोटी दो मशीनों पर 29 लाख रुपये खर्च किए गए हैं। शनिवार को तीन नई मशीनों का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि विधायक कंवर सिंह यादव और नगर पालिका चेयरमैन रमेश सैनी ने नारियल फोड़कर मशीन का विधिवत शुभारंभ किया।

विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि नई मशीनों के शामिल होने से विभाग की कार्यक्षमता में बढ़ोतरी होगी और क्षेत्र में पेयजल व अन्य जनस्वास्थ्य से जुड़ी सेवाओं को समयबद्ध और प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सकेगा। विधायक ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन मशीनों का उपयोग पारदर्शिता और दक्षता के साथ किया जाए तथा जनता की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित किया जाए। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग कार्यकारी अभियंता अमित जैन ने बताया कि नई मशीनें आधुनिक तकनीक से लैस हैं, जिनके आने से पाइप लाइन मरम्मत, पानी की सप्लाई में सुधार और अन्य तकनीकी कार्यों में तेजी आएगी।

बता दें कि शहर में करीब दो दशक पहले सीवरेज व्यवस्था शुरू हुई थी। उस समय शहर की आबादी के हिसाब से सीवरेज सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई थी, लेकिन दो दशकों में आबादी बढ़ी, हालांकि सीवरेज व्यवस्था में सुविधा नहीं बढ़ पाई। ऐसे में शहर में डाली हुई सीवरेज व्यवस्था कभी कहीं से तो कभी कहीं से जाम हो जाती है। बरसात के दिनों में तो इनका ओर भी बुरा हाल हो जाता है। शहर में काफी जगह सीवरेज पूरी तरह से जवाब दे जाती है और फिर विभाग को उन्हें दुरूस्त करने के लिए पसीने बहाने पड़ते हैं, वही शहर के लोगों की भी काफी सुननी पड़ती है। इसके अलावा महेंद्रगढ़ में जेटिंग मशीन थी तो ओवरेज होने के साथ-साथ अक्सर खराब रहती थी। जिस कारण से शहर में सीवरेज व्यवस्था को सुचारू रखने में विभाग को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर उपमंडल अभियंता जिया राम, कृष्ण ठेकेदार, रणधीर सिंह आदलपुर, सुनील अग्रवाल व्यापार मंडल अध्यक्ष महेंद्रगढ़, लक्ष्मीकांत पार्षद, राहुल यादव, राजदीप, डॉ. महेश, दीपक बुचौली, यज्ञदत्त शर्मा आदि विभाग के कर्मचारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

एटीएम गैस कटर से काटने का प्रयास, लाखों था कैश

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

सेंट्रल बैंक आफ इंडिया अटेली शाखा नारनौल-रेवाड़ी मार्ग पर स्थित अनाज मंडी के गेट के समीप एटीएम को शनिवार तड़के गैस कटर से काटने का प्रयास किया, लेकिन सर्विसलांस बजने के कारण चोरी नहीं हो सकी। सूचना पा कर अटेली पुलिस सुबह मौके पर पहुंच कर अग्रिम कार्रवाई की। एटीएम में लाखों रुपये का कैश था, एटीएम 24 घंटे का है, इस पर कोई गार्ड नहीं है।

बैंक प्रबंधक नरेश बूमरा ने बताया कि सेंट्रल बैंक के एटीएम को एक कंपनी को दिया हुआ है वही इसमें कैश डालती है। दोपहर बाद अटेली पुलिस के अलावा साआईए टीम ने मौका मुआयना किया। एफएसएल की टीम ने सैंपल भी लिये। बताया जाता है कि चोरों ने सीसीटीवी पर काले रंग का छिड़काव कर बंद कर दिया। जानकारी के मुताबिक दूसरे स्थानों से मिले सीसीटीवी फुटेज से मालूम चला है घटना चार बजे के करीब की है जिसमें चार से पांच की संख्या में लोग थे तथा बाहर थार गाड़ी भी दिखाई दी है।

मंडी अटेली। एटीएम को गैस कटर से काटने का किया प्रयास। फोटो : हरिभूमि

पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच कर रही है। सर्दी बढ़ते ही चोरी की घटनाएं बढ़ने लगी है। बता दें कि इसी बैंक में दो साल पहले भी चोरों ने निशाना बनाया था। एटीएम पर गार्ड नहीं होने से चोरी का खतरा रहता है।

प्राथमिक हेल्थ सेंटर सिहमा में पहुंची एंटी रेबीज की वैक्सीन

हरिभूमि में खबर प्रकाशित होने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने मामला संज्ञान में लिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

प्राथमिक हेल्थ सेंटर सिहमा पिछले करीब एक माह से एंटी रेबीज के टीके की सप्लाई नहीं आने से वैक्सीन पूरी तरह से खत्म हो गई थी। ऐसे में अस्पताल में कुत्ते के काटने पर इलाज के लिए आने वालों को बिना उपचार के ही लौटना पड़ रहा था। ऐसी स्थिति में मरीजों को उपचार के लिए बाहर से ही दवाई खरीद कर लानी पड़ रही थी। वहीं निजी मेडिकल स्टोर पर इस टीके की कीमत करीब 600 रुपये एंटी रेबीज वैक्सीन लग रही थी। इस समस्या को शुक्रवार को हरिभूमि ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। खबर प्रकाशित होने के बाद स्वास्थ्य विभाग हरकत में आया। उसी दिन ही अस्पताल में एंटी रेबीज वैक्सीन पहुंच गई थी। वहीं सिहमा की सरपंच सुमन देवी, खामपुरा की सरपंच प्रियंका देवी, गुवानी की सरपंच रीना यादव, डेरोली अहीर के सरपंच लखीराम यादव, हवासिंह ने हरिभूमि का आभार व्यक्त किया है। उनका कहना है कि अखबार जनहित के मुद्दों को उठाकर आम लोगों की आवाज बन रहा है। यह लोगों के लिए उम्मीद की किरण साबित हो रहा है।

मंडी अटेली। हरिभूमि में प्रकाशित खबर।

- पुलिस द्वारा पेश करने पर कोर्ट ने आरोपी को भेजा नसीबपुर जेल

कनीना। पुलिस टीम द्वारा भिवानी से गिरफ्तार किया गया सिलेंडर उठाने का आरोपित। फोटो : हरिभूमि

सिलेंडर लेकर फरार होने वाला आरोपित गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज. कनीना

फॉलोअप

क्षेत्र के गांव छितरौली, उच्चत व बागोत से शातिर ठग ने बहाना बनाकर तीन घरेलू गैस सिलेंडर चुराए थे। शिकायत मिलने के बाद सदर थाना पुलिस टीम ने आरोपित ठग को भिवानी से कार में रखे सिलेंडर सहित काबू कर लिया है। आरोपित ठग की पहचान जिला भिवानी के गांव जताई निवासी पवन कुमार के रूप में हुई है। पुलिस पूछताछ में माना जा रहा है कि इसके खिलाफ पहले भी दर्जनों केस दर्ज हैं। पुलिस ने गाड़ी व सिलेंडर भी कब्जे में ले लिए हैं। पुलिस ने आरोपित को एसडीजेएम कोर्ट कनीना में पेश किया, जहां कोर्ट ने उसे न्यायिक हिरासत में नसीबपुर जेल भेज दिया।

करंट की चपेट से लोरिंग मशीन ऑपरेटर की मौत

- इसराना गांव में हुए हादसे में गई नांगल मोहनपुर के व्यक्ति की जान
- परिजनों ने बिजली निगम अधिकारियों व कर्मचारियों पर लगाया लापरवाही का आरोप

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

गांव नांगल मोहनपुर में कुएं पर ट्रांसफार्मर लगाते समय करंट लगने से लोरिंग मशीन ऑपरेटर की मौत हो गई। परिजनों ने बिजली निगम कर्मचारियों व अधिकारियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए पुलिस केस दर्ज कराया है। मृतक ऑपरेटर की पहचान गांव मोहनपुर निवासी 46 वर्षीय महेश कुमार के रूप में हुई है।

मृतक के चाचा अनिल कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि शुक्रवार सांय करीब दो बजे महेश कुमार के पास बिजली निगम के कर्मचारी का मोबाइल पर संदेश आया कि वह लोरिंग मशीन लेकर इसराना गांव में घनश्याम के कुएं पर पहुंचे जहां ट्रांसफार्मर लगाया जाना है। कर्मचारी के बताए अनुसार उसका भतीजा महेश कुमार मशीन लेकर घनश्याम के कुएं पर पहुंच गया। बिजली निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों की हिदायत अनुसार लोरिंग मशीन से ट्रांसफार्मर लगाने का कार्य करने लगा। उन्होंने बताया कि इस दौरान ट्रांसफार्मर की एचटी लाइन में बिजली सप्लाई चालू कर दी। जिससे करंट लगने पर महेश कुमार बुरी तरह झुलस गया। परिजन उसे निजी वाहन से उप नागरिक अस्पताल लेकर आए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बिजली निगम कर्मचारियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज करने की मांग की। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शनिवार को उप नागरिक अस्पताल कनीना में शव का पंचनामा कर शव परिजनों को सौंप दिया। जहां परिजनों ने गमगीन माहौल में उसका अंतिम संस्कार कर दिया। पुलिस के अनुसंधान अधिकारी महावीर सिंह ने बताया कि मृतक के चाचा अनिल कुमार की शिकायत पर बिजली निगम के दोषी अधिकारियों व कर्मचारियों के विरूद्ध बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया है।

कनीना। उप नागरिक अस्पताल में मृतक का पंचनामा करवाते परिजन एवं पुलिस अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

योजना पर 24 करोड़ रुपये खर्च, 50 क्यूसेक पानी के प्रवाह की क्षमता

कृष्णावती नदी में एक और रिचार्ज लाइन होगी प्रारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सिंचाई विभाग ने अटेली-कनीना क्षेत्र के किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार के पिछले कार्यकाल में तीन महत्वपूर्ण योजनाएं स्वीकृत की थी, जिसमें से एक योजना नारनौल ब्रांच मुख्य नहर से भालखी गांव से प्रारंभ होकर यह रिचार्ज लायन गांव राता कलां के पास कृष्णावती नदी में पानी डालने के लिए बनाया गया है। यह तीनों योजनाएं तत्कालीन विधायक अटेली की सिफारिश पर तत्कालीन सिंचाई मंत्री डॉक्टर अभय सिंह यादव के कार्यकाल में स्वीकृत की गई थी। शुक्रवार प्रारंभ हुई इस योजना पर लगभग 24 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं तथा 12 किलोमीटर लंबी यह पाइप लाइन छह फुट चौड़ाई के साथ डाली गई है, जिसमें 50 क्यूसेक पानी के प्रवाह की क्षमता है।

इस पाइप लाइन के प्रारंभ होने के पूर्व विधायक सीता राम यादव एवं पूर्व सिचांई मंत्री डाक्टर अभयसिंह यादव मौक़े पर देखने के लिए पहुंचे। इस पाइप लाइन के माध्यम से प्राप्त होने वाले पानी को देखकर आसपास के ग्रामवासियों में खुशी है। ग्रामवासियों ने कहा कि इस पाइप लाइन के माध्यम से आने वाले इस पानी से समस्त क्षेत्र की जल व्यवस्था सुधरेगी तथा भूजल स्तर में आमूलचूल सुधार होगा। जब अन्य दो रिचार्ज योजनाएं जो कृष्णावती नदी को रिचार्ज करने से ही संबंधित है और इसी योजना के साथ मंजूर की गई थी, उन दोनों के पूरे होने के उपरांत यह समस्त क्षेत्र पानी से लबालब हो जाएगी।

नारनौल। मौके का निरीक्षण करते पूर्व सिंचाई मंत्री अभयसिंह व पूर्व विधायक सीताराम। फोटो : हरिभूमि

कृष्णावती नदी में पानी लाने की दूसरी स्कीम

दूसरी स्कीम सुरजनवास खेड़ा गांव से मानपुर के पास कृष्णावती नदी में पानी लाने के लिए बनाई गई है और वह भी लगभग पूरी हो चुकी है। 30 करोड़ रुपय से ज़्यादा की लागत से बनने वाली यह दूसरी लाइन अगले कुछ महीनों में प्रारंभ कर दी जाएगी। गढ़ी महासर के पास ही कृष्णावती नदी के फ़ालतू पानी को बाईपास करके राता कलां के पास डालने का काम लगभग पूरा होने को है।

तीनों महत्वपूर्ण योजनाओं की मंजूरी के लिए सीएम का धन्यवाद

इस मौके पर डाक्टर अभय सिंह यादव ने कहा कि यह दोनों लाइनें पूरी होने के उपरांत सम्पूर्ण कृष्णावती नदी के रिचार्ज का काम पूरा हो जाएगा तथा इसके अतिरिक्त महेंद्रगढ़ जिले की दोनों महत्त्वपूर्ण नदियों को पूरी तरह रिचार्ज करने का काम भी पूरा कर लिया गया है। इसके साथ ही पूरे जिले की एक सुरक्षित जल व्यवस्था कर दी गई है। जिसे हर साल बरसात की ऋतुओं में प्राप्त होने वाले फ़ालतू पानी से इस जिले की पानी की समस्या काफी हद तक हल हो रही है। उन्होंने इन तीनों महत्वपूर्ण योजनाओं की मंजूरी के लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी का धन्यवाद किया कि उन्होंने लगभग 55 करोड़ रुपये की यह तीन योजनाएं स्वीकृत की। उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारियों की भी प्रशंसा करते हुए उनका धन्यवाद भी किया, जो पिछले कुछ सालों में सिंचाई विभाग के अधिकारियों की कड़ी मेहनत से जल व्यवस्था में आमूल चूल सुधार हुआ है।

शेयर बाजार Vs एसआईपी बेहतर है कौन

प्लानिंग | बिजनेस डेस्क

अगर आप भी एक नए निवेशक हैं और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरुआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं।

पैसों का निवेश जरूरी

पैसों का निवेश करना बहुत ही जरूरी होता है। ऐसे में हर व्यक्ति को अपनी बचत को एक अच्छी जगह निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपनी वेल्थ को बढ़ा सकें। पैसों को निवेश करने के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। कुछ लोग सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं, जिसके लिए वह बैंक एफडी और स्मॉल सेविंग स्कीम में अपने पैसों का निवेश करते हैं। वहीं कुछ लोग ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए रिस्क लेते हैं और शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में अपने पैसों का निवेश करते हैं। अगर आप भी एक नए निवेशक हैं, और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरुआत करनी चाहिए. आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं।

आइए जानते हैं नए निवेशक कहां से शुरू करें निवेश

बात करें शेयर बाजार में निवेश की तो शेयर बाजार में निवेश काफी रिस्क भरा होता है। किसी भी कंपनी के शेयर खरीदने पर आपको कितना रिटर्न मिलेगा, यह सीधा शेयर की कीमत पर निर्भर करता है। शेयर की कीमत बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है। कीमत घटने पर आपको नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको कंपनी के कारोबार, बैलेंस शीट और सेक्टर ट्रेंड्स की समझ जरूर होनी चाहिए। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए।

नए निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड बेस्ट

अब बात कर लेते हैं म्यूचुअल फंड में निवेश की, तो शेयर बाजार में पहले न निवेश कर आपको सबसे पहले एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए। म्यूचुअल फंड के जरिए भी आपके पैसे शेयर बाजार में ही लगाए जाते हैं लेकिन यह पैसे कब और कैसे और कितना लगाना है, यह फंड मैनेजर तय करते हैं। एसआईपी में आप बस हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करते हैं। लंबे समय तक निवेश कर आप यहां औसतन 12 प्रतिशत की दर से रिटर्न पा सकते हैं। शुरुआत में म्यूचुअल फंड में निवेश कर आप बाजार की चाल को समझ सकते हैं और आपको शेयर बाजार की समझ भी होगी। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले एक बार म्यूचुअल फंड में निवेश जरूर करें।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।'

अनजाने और अनचाहे खर्च को रोकना होगा, मिडिल क्लास को नहीं रहेगी टेंशन

सैलरी मिलने के कुछ दिन बाद ही पर्स हो जाता है खाली, ये टिप्स आएंगे काम

उदाहरण से समझें : रिया 90,000 रुपये महीना कमाती हैं। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती हैं। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है।

महीने की शुरुआत में जब फोन पर सैलरी अकाउंट में क्रेडिट होने का मैसेज आता है तो काफी खुशी होती है। लेकिन यह खुशी कुछ दिनों तक ही रहती है। 15-20 दिन गुजरने के बाद आर्थिक तंगी के हालात शुरू हो जाते हैं। ऐसा काफी लोगों के साथ होता है। मिडिल क्लास के साथ तो लगभग हर महीने यही स्थिति रहती है। 15-20 दिन बीतने के बाद चिंता सताने लगती है कि आखिर सैलरी का पैसा कहां खर्च हो गया? एक्सपर्ट ने कुछ सुझाव दिए हैं जिसमें इसका कारण और समाधान भी बताया है गया है। एक्सपर्ट के अनुसार हमसे कुछ अनजाने और अनचाहे खर्च ऐसे हो जाते हैं जिनके कारण धीरे-धीरे सैलरी का पैसा खर्च होना शुरू हो जाता है। हालात कई बार ऐसे आ जाते हैं कि सैलरी मिलने के 20 दिन बाद ही बटुआ खाली हो जाता है। समस्या यह नहीं है कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि यह है कि आप उस पैसे को कैसे मैनेज करते हैं।

कहां गया सारा पैसा?

एक्सपर्ट्स के मुताबिक 'आपकी सैलरी अभी-अभी क्रेडिट हुई है। वो खुशी वाला अलर्ट देखकर मुस्कान आ जाती है, है ना? लेकिन 20 दिन बाद आपका यूपीआई बैलेंस आपको सोचने पर मजबूर कर देता है- सारा पैसा कहां गया? यह कहानी कई मिडिल क्लास भारतीयों की है।'

आपकी लाइफ कैसी होगी यह आपके कमाने पर निर्भर नहीं होता है, बल्कि यह निर्भर करता है कि आप बचाते कितना है। उन्होंने लिखा है, 'आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।' उन्होंने आगे कहा कि दौलत सिर्फ कमाई से नहीं, बल्कि मैनेजमेंट और लगातार कोशिशों से बनती है।

उदाहरण से समझें गणित

अपनी बात को समझाने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेते हैं। एक लड़की रिया जो एक कंसल्टेंट हैं और 90,000 रुपये महीना कमाती हैं। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती हैं। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है। छोटे-छोटे फैसले चुपके से बड़ी दौलत बन जाते हैं।

आखिर क्यों 'गायब' हो जाती है सैलरी

सैलरी गायब होने के पीछे असली वजह अनकॉन्शियस स्पेंडिंग यानी ऐसे खर्च है जो अनजाने में होता है। कई बार ऐसे छोटे खर्चे होते हैं जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता। उनके मुताबिक हमारा दिमाग बड़े खर्चे पहचान लेता है लेकिन छोटे खर्चे जैसे- रोजाना का खर्च, सब्सक्रिप्शन, अचानक कुछ खरीदना आदि खर्च का पता ही नहीं चलता। इस कारण हर महीने 25 से 40 हजार रुपये चुपके से खर्च हो जाते हैं। यही कारण है कि सैलरी आने के बाद महीना खत्म होने से पहले ही बटुआ खाली हो जाता है।

ये हैं काम के टिप्स

ऐसे अनचाहे खर्च को रोकने और पैसे पर कंट्रोल के लिए 4 टिप्स हैं। अपनी सैलरी की तरह हर महीने बचत को ऑटोमेटिक कर लें। इसके लिए किसी मुश्किल अकाउंट की जरूरत नहीं है। **बस 4 आसान पॉकेट बना लें।**

ये इस प्रकार हैं :

1. सैलरी हब : यह आपका मुख्य इनकम अकाउंट है। यानी आपकी सैलरी इसी अकाउंट में आती है।
2. सेफ्टी नेट : इसमें इमरजेंसी फंड और लक्ष्य-आधारित बचत के लिए पैसा रखें। यह रकम 60:40 के रेश्यो में होनी चाहिए।
3. ग्रोथ इंजन : यह अकाउंट सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और ऑटोमेटेड इन्वेस्टमेंट के लिए है।
4. डेली एक्सपेंसेसः यह अकाउंट यूपीआई और बिल पेमेंट के लिए है। यह आपकी सेविंग से अलग होगा।

टाइमिंग का रखें ध्यान

ऊपर बताए चार पॉकेट में पैसा समय पर इन्वेस्ट कर दें। यहां टाइमिंग बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर लोगों की सैलरी महीने की आखिरी तारीख (30 या 31) या 1 तारीख को आ जाती है। ऐसे में हर महीने की 2 तारीख को ऑटोमेटिक ट्रांसफर सेट करें। महीने के बीच में खर्चों की समीक्षा करें और 25 तारीख तक अगले महीने की तैयारी कर लें।

ये तीन मंत्र काम के

पैसा कमाना एक स्किल है। पैसा बचाना एक आर्ट है और पैसे को कंपाउंड करना (ब्याज पर ब्याज कमाना) साइंस है। इन तीनों में महारत हासिल करें। ऐसे में फाइनेंशियल फ्रीडम अपने आप मिल जाएगी। पैसे का सही प्रयोग ही हमें जल्दी अमीर बना सकता है।

एक लाख 3 साल की एफडी में निवेश करने पर कौन सा बैंक दे रहा है सबसे ज्यादा रिटर्न

नॉलेज | बिजनेस डेस्क

आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं. आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं। जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है, तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को बैंक एफडी में ही निवेश करना पसंद करते हैं. इसका कारण एफडी में मिलने वाला फिक्स्ड रिटर्न और पैसों की सुरक्षा है. देश के अलग अलग बैंकों द्वारा अपनी अलग अलग अवधि वाली एफडी पर अलग अलग ब्याज दर से रिटर्न ऑफर किया जाता है. आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं. आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

प्राइवेट बैंक इंडसइंड बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में सबसे ज्यादा ब्याज दर से रिटर्न ऑफर कर रहा है। इस बैंक की 3 साल की एफडी की ब्याज दरें 6.65 प्रतिशत हैं। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,950 रुपये मिलेंगे।

एक्सिस बैंक की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एक्सिस बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.60 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,800 रुपये मिलेंगे।

एचडीएफसी की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एचडीएफसी बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.40 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,200 रुपये मिलेंगे।

एसबीआई की 3 साल की एफडी

सरकारी बैंक एसबीआई अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.30 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,900 रुपये मिलेंगे

केनरा बैंक की 3 वर्षीय एफडी

सरकारी बैंक केनरा बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.25 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,750 रुपये मिलेंगे।

एफडी के अलावा इन 5 सरकारी स्कीम में करें पैसों का सुरक्षित निवेश

बैंक एफडी के अलावा भी सुरक्षित निवेश के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। एफडी के अलावा आप सरकार की स्मॉल सेविंग स्कीम में अपने पैसों का निवेश कर सकते हैं। आइए जानते हैं।

जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को केवल बैंक एफडी में ही निवेश करते हैं क्योंकि बैंक एफडी में पैसा सुरक्षित रहता है यानी पैसों के खो जाने का कोई डर नहीं होता है लेकिन बैंक एफडी के अलावा भी ऐसी कई स्कीम हैं, जहां लोग अपने पैसों को सुरक्षित तरीके से निवेश कर सकते हैं और काफी अच्छा रिटर्न पा सकते हैं। हम बात कर रहे हैं सरकार की स्मॉल सेविंग स्कीम के बारे में। स्मॉल सेविंग स्कीम में आपको एक निश्चित ब्याज दर से रिटर्न मिलता है, और यह सरकारी स्कीम है. ऐसे में आपको पैसों की पूरी सुरक्षा भी मिलेगी। आइए जानते हैं बैंक एफडी के अलावा आप किस-किस सरकारी स्कीम में पैसों का निवेश कर सकते हैं

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट यानी एनएससी पोस्ट ऑफिस की सरकारी स्कीम है, जहां आपको 5 साल की अवधि के लिए अपने पैसों का निवेश करना होता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट में आपको 7.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम

अगर आपकी उम्र 60 साल से अधिक है तो आप सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम में 5 सालों के लिए अपने पैसों को निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम में 8.2 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। यहां आप अधिकतम 30 लाख रुपये का निवेश कर सकते हैं।

पोस्ट ऑफिस आरडी

अगर आप एक साथ निवेश न कर थोड़ा थोड़ा निवेश करना चाहते हैं तो आप पोस्ट ऑफिस की आरडी में निवेश कर सकते हैं. यहां आपको हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करनी होती है. इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का होता है। आरडी में 6.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

किसान विकास पत्र

पोस्ट ऑफिस की किसान विकास पत्र यानी केवीपी स्कीम में आप अपने पैसों को 115 महीनों के लिए निवेश करके उन्हें डबल बना सकते हैं। किसान विकास पत्र स्कीम में 7.5 प्रतिशत सालाना की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है. ऐसे में आप यहां भी निवेश कर सकते हैं।

स्मार्ट निवेशक ऐसे पहचानते हैं म्यूचुअल फंड बेचने का सही वक्त

सुझाव
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में इन्वेस्टमेंट करने की बात तो हर निवेशक करता है, कौन सा फंडसबसे अच्छा है, कौन सा फंड मैनेजर बेहतर रिटर्न दे रहा है, या कौन सी स्कीम में पैसा लगाना चाहिए। हालांकि जब बात आती है म्यूचुअल फंड बेचने की, तो ज्यादातर लोग या तो गलत समय पर बेच देते हैं या फिर कभी बेचते ही नहीं, जबकि सच यह है कि जितना जरूरी इन्वेस्टमेंट करना है, उतना ही जरूरी है सही समय पर बेचना भी। अगर आप यह नहीं जानते कि म्यूचुअल फंड कब बेचना चाहिए, तो आपका अच्छा फंड भी नुकसान में बदल सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि मार्केट में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपने फंड को बेच देते हैं। यह सबसे आम लेकिन सबसे बड़ी गलती होती है। जैसे कि 2008 के वित्तीय संकट के दौरान कई निवेशकों ने डरकर अपने फंड बेच दिए थे, लेकिन उस टाइम पर अगर उन्होंने धैर्य रखा होता, तो अगले पांच सालों में उनकी रकम दोगुनी हो सकती थी, तो इसलिए, मार्केट गिरने पर डरकर फंड बेचना नहीं, बल्कि धैर्य रखना जरूरी होता है।

गलत समय पर म्यूचुअल फंड बेचने से हो सकता है भारी नुकसान

कब नहीं बेचना चाहिए?

कई बार फंड कुछ महीनों के लिए खराब प्रदर्शन करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि फंड खराब है। हर इन्वेस्टमेंट प्रोडक्शन के उतार-चढ़ाव के चक्र होते हैं। अगर आपने किसी उद्देश्य के लिए निवेश किया है, जैसे बच्चे की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट, तो बीच में फंड बेचने की गलती न करें। इसके अलावा, सिर्फ इसलिए फंड न बेचें क्योंकि आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार किसी नए फंड में निवेश कर रहा है। वैसे निवेशकों को औसतन करीब 3-4% कम रिटर्न मिल सकता है क्योंकि वे गलत समय पर फंड बेच देते हैं, यानी निवेशक खुद अपने नुकसान के जिम्मेदार बन जाते हैं।

कब बेचना चाहिए फंड?

म्यूचुअल फंड में निवेश जितना जरूरी है, उतना ही अहम है सही समय पर उसे बेचना। फंड को बेचना किसी जल्दबाजी का नहीं बल्कि एक रणनीतिक फैसला होना चाहिए। अगर आपका फाइनेंशियल टारगेट जैसे बच्चे की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट पूरा हो गया है, तो मुनाफा बुक कर लेना समझदारी है। वहीं, अगर कोई फंड लगातार 2-3 साल से खराब प्रदर्शन कर रहा है या अपने बेंचमार्क से पिछड़ रहा है, तो इसे बदलने का समय आ गया है। जिंदगी में फाइनेंशियल बदलाव जैसे नौकरी छूटना या रिटायरमेंट की स्थिति में जोखिम कम करना चाहिए। इसके अलावा, जब मार्केट ऊंचाई पर हो, तब आंशिक मुनाफा निकालकर अपनी पूंजी सुरक्षित करना बेहतर प्लानिंग मानी जाती है।

फंड बेचने से पहले ये रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड बेचने से पहले जल्दबाजी में कोई कदम उठाना नुकसानदायक हो सकता है। सबसे पहले अपने फंड की पूरी समीक्षा करें, क्या फंड मैनेजर, निवेश प्लानिंग या खर्च संरचना में कोई बड़ा बदलाव हुआ है? अगर हां, तो स्थिति को समझकर निर्णय लें। किसी भी कदम से पहले अपने फाइनेंशियल सलाहकार की राय जरूर लें, ताकि नुकसान से बचा जा सके। तो याद रखें, म्यूचुअल फंड एक लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट है इसलिए बाजार के उतार-चढ़ाव में घबराने की बजाय धैर्य रखें और अपनी वित्तीय योजना से भटकें नहीं। भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में जबरदस्त ग्रोथ

भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है। यह साबित करता है कि लोग अब पारंपरिक निवेश की बजाय म्यूचुअल फंड्स को दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण का साधन मान रहे हैं। हालांकि, केवल निवेश करना ही काफी नहीं है। सही समय पर फंड बेचना भी एक समझदार निवेशक की पहचान होती है। बाजार की स्थिति, अपने लक्ष्य और फंड के प्रदर्शन को समझकर निर्णय लेना ही सफल निवेश की कुंजी है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

कर्मचारियों ने विधायक से मुख्यमंत्री के समक्ष पैरवी करने का आग्रह किया

ग्रामीण सफाई कर्मियों ने मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को रिटायरमेंट पर एकमुश्त 10 लाख रुपये व दस हजार रुपये पेंशन हर माह लागू हो

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। शहर में प्रदर्शन करते ग्रामीण सफाई कर्मचारी व विधायक कंवर सिंह यादव को ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के रविवार को नारनौल आगमन को लेकर ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन संबंधित एआईयूटीयूसी की ओर से ग्रामीण सफाई कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर शनिवार को विधायक कंवर सिंह यादव को ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन जिला प्रधान पवन कुमार वाल्मीकि, जिला सचिव जगदीश प्रसाद सतनाली व एआईयूटीयूसी मुकेश कुमार यादव की अगुवाई में सौंपा गया।

कर्मचारियों ने विधायक कंवर सिंह यादव से मुख्यमंत्रीके समक्ष लंबित मांगों को स्वीकार किए जाने की पैरवी का आग्रह किया। जिला प्रधान ने बताया कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी पिछले 18 वर्षों से गांव में साफ-सफाई कार्य कर गांव में स्वच्छता अभियान की रीढ़ है और गांवों को साफ-सुथरा कर बीमारियों से बचाव में सफाई कर्मियों के योगदान को देखते हुए सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाना न्यायसंगत मांगों में शुमार है। इसके बावजूद इसके 18 वर्षों से लगातार संतोषजनक सेवाओं के ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को नियमित कर्मचारी का दर्जा नहीं दिया गया है।

गांवों में सरपंचों की मनमानी से कर्मचारियों की नौकरी पर आए दिन तलवार लटकी रहती है। कनीना ब्लॉक के गांव गोमला के सफाई कर्मचारी चिंतामणि व गंगाराम गांव के सरपंच व बीडीपीओ कनीना ने बिना किसी कमेटी की जांच व विभागीय कार्रवाई की पालना के बिना ही गैर-कानूनी तरीके से नौकरी से हटाकर एक गरीब दंपति की रोजी-रोटी छीन ली, जिनकी आजीविका का यही एकमात्र साधन था और उनके पांच बच्चों का जीवन संकट में पड़ गया है। यह गरीब चिंतामणि परिवार के साथ सरासर नाइंसाफी है, इसके लिए उसे नौकरी पर बहाल किया जाए।

ज्ञापन में कहा गया है कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी बेहद गरीब परिवारों से है और पिछले 18 सालों से लगातार काम कर रहे हैं, लेकिन ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को न ही अभी तक सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया गया है और न ही न्यूनतम वेतन 26 हजार रुपये लागू किया गया है, जिससे इस बढ़ती मंहगाई में परिवार का जीवनयापन बेहद मुश्किल है।

हमें सामाजिक सुरक्षा के दायरे से भी वंचित हैं। ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को रिटायरमेंट पर एकमुश्त 10 लाख रुपये व दस हजार रुपये पेंशन हर माह लागू हो। इसके अलावा सरपंचों के अनावश्यक हस्तक्षेप से आए दिन हटाने की धमकी मिलती है, इसलिए हमें नौकरी सुरक्षा की भी गारंटी दी जाए।

ये रहे मौजूद

इस मौके ब्लाक कनीना प्रधान दीपक, सचिव महेश कुमार, प्रेस सचिव रवि, कोषाध्यक्ष सोनू, महेंद्रगढ़ ब्लॉक प्रधान राजेन्द्र, सचिव मुकेश व सत्यनारायण सहित अनेक कर्मचारी उपस्थित रहे।

करंट लगने से एक व्यक्ति की मौत

नारनौल। गांव रामबास में करंट लगने से 67 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई। व्यक्ति सुबह नहाने के लिए पानी ले रहा था। इस दौरान बाल्टी में लगी रॉड में करंट आ गया। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव का नागरिक अस्पताल से पोस्टमॉर्टम करवा परिजनों को सौंप दिया। गांव रामबास निवासी करीब 67 वर्षीय रतिराम बीते कल सुबह अपने घर में नहाने के लिए गर्म पानी ले रहा था। इस दौरान जब वह बाल्टी से पानी लेने लगा तो बाल्टी में लगी रॉड में करंट आ गया। इससे उनको करंट लग गया। करंट लगने के कारण रतिराम बेहोश होकर वहां पर गिर गया। उसके बेहोश होकर गिरने पर परिजनों ने उसको उठाया तथा उपचार के लिए तुरंत नागरिक अस्पताल पहुंचाया। जहां पर डाक्टरों ने रति राम को मृत घोषित कर दिया। मृतक के पुत्र नरेश कुमार ने बताया कि उसके पिता जमींदार थे तथा खेतीबाड़ी करते थे। उनके एक लड़का व चार लड़कियां हैं। सभी की शादी हो चुकी है।

नारनौल। बैठक में भाग लेते हुए। फोटो : हरिभूमि

प्रगतिशील प्रजापित संगठन की हुई बैठक

नारनौल। प्रगतिशील प्रजापति संगठन की एक आवश्यक बैठक संगठन के कार्यालय स्थित नसीरपुर में संपन्न हुई ।बैठक में सभी पदाधिकारी ने फैसला लिया कि 16 नवंबर को सीएम नायब सिंह सैनी के नारनौल आगमन पर उनका स्वागत किया जाएगा तथा उनके समक्ष संगठन, समाज के विकास व उन्नति के लिए कुछ प्रस्ताव पेश करने का फैसला लिया गया। इस मौके पर प्रधान बनवारी लाल, उपप्रधान लालाराम, उपप्रधान रामसिंह, मोहरसिंह, सीताराम, कृष्ण कुमार नंबरदार, फूलचंद, रमेश एडवोकेट आदि उपस्थित थे।

नारनौल। कर्मशाला प्रबंधक संदीप कुमार का स्वागत करते पूर्व प्रधान अनिल भीलवाड़ा व अन्य। फोटो : हरिभूमि

रोडवेज कर्मशाला प्रबंधक ने संभाला कार्यभार

नारनौल। रोडवेज बस डिपो में कर्मशाला प्रबंधक के तौर पर संदीप कुमार ज्वॉइनिंग की है, जोकि पहले भिवानी डिपो में फोरमैन के पद पर कार्यरत थे। संदीप कुमार का नारनौल डिपो में ज्वाइन करने पर कर्मचारियों ने उनको गुलदस्ता भेंटकर स्वागत किया। कर्मशाला प्रबंधक ने कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि वह आने वाले समय में नारनौल डिपो के कर्मचारियों, रोडवेज विभाग और जनहित के लिए मिलजुलकर अच्छे से अच्छे कार्य करेंगे। कर्मशाला प्रबंधक के स्वागत में नारनौल डिपो के पूर्व प्रधान अनिल भीलवाड़ा, संजय नीरपुर, प्रीतम बागड़ी, कुलदीप मास्टर, दलजीत, सुरेंद्र वकील, प्रीतम नांगल सिरोही, विकास भुंगारका, सुंदर बेवल, नरेश, दयानंद आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

अहीर रेजिमेंट और 120 बहादुर में अहीर शब्द शामिल किया जाए: पूर्व सांसद

पूर्व सांसद चौधरी बृजेंद्र सिंह के नेतृत्व में नारनौल से चलकर महेंद्रगढ़ पहुंची जनसद्भावना यात्रा, कांग्रेस के बड़े नेता नहीं हुए शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। पत्रकारवार्ता करते पूर्व सांसद एवं यात्रा संयोजक बृजेंद्र सिंह।

अहीर रेजिमेंट एवं 120 बहादुर फिल्म के टाइटल में अहीर शब्द शामिल करना अहीरवाल इलाके की मांग जायज है तथा इन मांगों को लागू किया जाना चाहिए। यह विचार पूर्व सांसद एवं सद्भावना यात्रा के संयोजक बृजेंद्र सिंह ने यादव सभा में आयोजित पत्रकारवार्ता में व्यक्त किए। चौधरी बृजेंद्र सिंह ने अहीर रेजिमेंट का समर्थन करते हुए सन 1962 में हुए रेजांगला युद्ध में जो 120 वीर शहीद हुए, उनमें सर्वाधिक अहीर समाज के थे।

इस युद्ध को लड़ने में जिस अदम्य साहस का परिचिय दिया, वह अतुलनीय है। यहां के अहीरों ने आजादी की लड़ाई ही नहीं, देश की आजादी के बाद हुए युद्धों में भी स्वर्णिम इतिहास रचा है और सीमाओं की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। उन्होंने बताया कि आज ही महेंद्रगढ़ में रेजांगला पार्क का शिलान्यास किया गया है तथा वह इसका सम्मान करते हैं। यह शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि का प्रतीक होगा। इस मौके पर पूर्व सांसद के पिता पूर्व मंत्री चौधरी बिरेंद्र सिंह, कांग्रेस के जिला प्रधान सत्यवीर झूकिया, महिला प्रधान राजवंती यादव, बार के पूर्व प्रधान एडवोकेट मंजीत सिंह यादव, पूर्व पार्षद डा. तरुण, भगवान सिंह झूक समेत सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कनीना। मिठाई बांटकर खुशी जताते व्यापारी। फोटो : हरिभूमि

बिहार चुनाव में एनडीए की जीत पर बांटी

कनीना। बिहार में एनडीए की सरकार बनने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने मिठाई बांटकर खुशी जताई है। व्यापार मंडल के वरिष्ठ नेता मनीष गुप्ता ने कहा कि बिहार में एनडीए को पूर्ण बहुमत मिलने के बाद बंगाल में भी सत्ता परिवर्तन का रास्ता खुल गया है। उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के आगे विपक्षी पार्टियों के हौसले परास्त हो रहे हैं। देश में तेजी से विकास हो रहा है। इस मौके पर व्यापार मंडल एवं भाजपा के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भारत को जानो प्रतियोगिता के विजेता हुए सम्मानित

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कांवी में विद्यालय स्तर की भारत को जानो प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को शनिवार विद्यालय प्राचार्य सुरेश कुमार ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस संबंध में प्रवक्ता डा. जितेंद्र भारद्वाज ने बताया कि भारत को जानो प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर पर कनिष्ठ वर्ग में कक्षा छह से आठ एवं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा नौवीं से 12वीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें कनिष्ठ वर्ग में कक्षा आठ के छात्र हर्ष ने प्रथम, कक्षा सात के निशांत ने द्वितीय तथा कक्षा आठ के वीरेन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा दसवीं के दीपांशु ने प्रथम, कक्षा 12वीं के शन्नी ने द्वितीय एवं कक्षा दसवीं की वंशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पिता की पुण्यतिथि पर गोशाला में लगाई सवामणी

नारनौल। गो सेवा मंडल के सानिध्य में सुरेश यादव ने अपने स्वर्गीय पिता श्रीराम यादव की तीसरी पुण्यतिथि पर गोमाता के लिए 35 क्विंटल हरी सब्जी की सवामणी श्री अनाथ गौशाला नारनौल में लगाई। सुरेश यादव ने बताया कि अपने बड़े बुजुर्गों की पुण्यतिथि पर गोमाता को हरा चारा व हरी सब्जी खिलाने से आत्मा को शांति प्राप्त होती है। संस्थापक मुकेश वालिया ने बताया कि मंडल द्वारा पिछले करीब चार वर्षों में अब तक 1320 सवामणी गोभक्तों के सहयोग से लगाई जा चुकी है। प्रधान सतपाल यादव ने कहा कि गोमाता सवामणी करने से मन के सभी विकार दूर होते हैं तथा घर में खुशियां आती है। बेजुबान गोमाता की सेवा से अधिक पुण्य कर्म और कोई नही हो सकता।

विधायक ने कार्यकर्ताओं की ली बैठक

हरिभूमि न्यूज. महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। कार्यकर्ताओं को दिशा-निर्देश देते विधायक।

विधायक कंवर सिंह यादव ने अपने कार्यालय पर कार्यकर्ताओं की एक बैठक लेकर 16 नवंबर को नारनौल में होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की। विधायक ने बताया कि महाराज शूर सैनी की जयंती के मुख्यातिथि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शिरकत करेंगे। जिसके लिए सभी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से पूरा करने के निर्देश दिए गए। महेंद्रगढ़ विधानसभा से 50 बसों की व्यवस्था की गई। जो सुबह नौ बजे महेंद्रगढ़ से काफिले में एक साथ रवाना होंगे। विधायक ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे अधिक से अधिक संख्या में लोगों को कार्यक्रम तक पहुंचाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएं, ताकि क्षेत्र के विकास से जुड़ी घोषणाओं का लाभ आम जनता तक पहुंच सके। इस मौके पर भाजपा जिला महामंत्री योगेश शास्त्री, मंडल अध्यक्ष नांगल सिरोही अशोक कुमार, मंडल अध्यक्ष महेंद्रगढ़ संदीप बचीनी, रवि शेखावत, प्रवीण कुमार, अधिवक्ता मोती सिंह, मार्केट कमेटी चेयरमैन भागीरथ शेखावत, कृष्ण देवनगर सरपंच, रणधीर सिंह आदलपुर, कृष्ण ठेकेदार, डॉ. महेश, पंकज बुचोली, दीपक बुचोली व सूरत सिंह आदि बीजेपी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कोसली। विद्यार्थियों को गर्म कपड़े वितरित करते गांव के सरपंच व अन्य।

विद्यार्थियों को वितरित किए गर्म कपड़े

कोसली। राजकीय उच्च विद्यालय लिसाना के छात्र-छात्राओं को सर्दी के मौसम की शुरूआत में गांव के सरपंच जयसिंह गांव के विपिन कुमार द्वारा गर्म कपड़े वितरित किए। विद्यालय के मुख्य अध्यापक विनोद कुमार ने कहा कि गांव के सरपंच जयसिंह वह विपिन यादव द्वारा गत वर्ष भी छात्र-छात्राओं को गर्म कपड़े वितरित किए थे जिसके लिए वह छात्र-छात्राओं की ओर से उनका आभार व्यक्त करते हैं कि वह इसी प्रकार समाज सेवा के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग ले और दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करें इस मौके पर राजकुमार देवेंद्र सिंह कृष्ण कुमार मुकेश कुमार सरल पूनम पंचायत समिति सदस्य बलदेव सतबीर कृष्णा सत्यवान सहित अन्य लोग मौजूद थे।

विद्यार्थी हमारे देश के भविष्य: बलजीत यादव

- बाल दिवस पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुतियां दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। कार्यक्रम चीफ गेस्ट का स्वागत करते हुए स्कूल स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

भारतीय जनता पार्टी जिला उपाध्यक्ष बलजीत सिंह यादव ने विश्वकर्मा सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बाल दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि आज के बच्चे ही हमारे देश का भविष्य हैं। आप लोगों में से ही कल राजनेता, डॉ, इंजीनियर और शिक्षक बनकर देश का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा कि आज हम संकल्प लेकर जाएं कि अपने से बड़ों, माता पिता और गुरुजनों का आदर करेंगे। डर कर नहीं बल्कि आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे। अंदर के सपनों को कभी छोटा नहीं होने देंगे। पढ़ाई को नंबरों के लिए नहीं कुछ नया सीखने के लिए करेंगे। सार्वजनिक संपत्ति को कभी नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

विद्यार्थियों को मेडल पहना कर सम्मानित किया

अपने विद्यालय एवं आस पास के स्थानों को साफ एवं स्वच्छ रखेंगे। आज आप द्वारा आगे बढ़ने के लिए किया गया संघर्ष आपकी कल की सफलता का आधार होगा। बाल दिवस पर बच्चों ने सुंदर प्रस्तुतियां दी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मेडल पहना करके सम्मानित किया गया इस मौके पर विश्वकर्मा शिक्षण संस्थान के प्रधान हेमंत कुमार शर्मा स्कूल की प्रधानाचार्य श्रुति शर्मा, महिला मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष नीतू शर्मा, सीडब्ल्यूसी काउंसलर नीतू एवं स्कूल के सभी अध्यापकगण और बच्चे उपस्थित थे।

जनजातीय गौरव दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

नारनौल। राजकीय महिला महाविद्यालय में जनजातीय गौरव दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. गीता यादव ने की। डॉ. गीता यादव ने कहा कि यह दिवस भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जा रहा है। जनजातीय गौरव दिवस का उद्देश्य जनजातीय समुदाय की संस्कृति, परंपरा और योगदान को सम्मानित करना है। यह दिवस जनजातीय समाज के लोगों को उनके अधिकारों और पहचान के प्रति जागरूक करने के लिए मनाया जाता है। इस मौके पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार अन्नू को, द्वितीय पुरस्कार लक्ष्मी को तथा तृतीय पुरस्कार तमन्ना और अंकिता चौधरी को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

सरकारी अस्पतालों में 1100 नए डॉक्टरों की नियुक्ति की गई

प्रदेश में हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर को किया जा रहा मजबूत: आरती

- दवा वितरण के कार्य को सुचारू किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कोसली। किसान भवन में मौजूद स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव व अन्य। फोटो : हरिभूमि

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार व आम जनता के लिए सभी तरह की मेडिकल सेवाएं सुलभ करवाने के लिए सरकार गंभीरता से काम कर रही है। सरकारी अस्पतालों में 1100 नए डॉक्टरों की नियुक्ति की गई है। इसके अलावा दवा वितरण के कार्य को सुचारू किया गया है। किसान भवन परिसर में आज कोसली मार्केट कमेटी के चेयरमैन महेश यादव और वाइस चेयरमैन दिनेश गोयल को पदभार ग्रहण करवाने के पश्चात स्वास्थ्य मंत्री स्थानीय मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रही थीं। उन्होंने कहा कि पहले उनकी निगाह प्रदेश के सामान्य अस्पतालों को समुचित चिकित्सा संसाधन उपलब्ध करवाने पर है।

दवाइयों का सीएमओ के पास स्टॉक होना आवश्यक

उसके बाद सब डिविजन लेवल के हॉस्पिटल, सीएचसी, पीएचसी तथा सब हेल्थ सेंटरों पर ध्यान दिया जाएगा। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की प्रक्रिया जारी है। दवाइयों की कमी को दूर किया जा रहा है। विभाग में इसके लिए एक अलग से पोर्टल बनाया हुआ है। जिसमें दर्शाई गई दवाईयों का सीएमओ के पास स्टॉक होना आवश्यक कर दिया गया है। आधुनिक मशीनों को बाहर से मंगवा कर सरकारी अस्पतालों में लगवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कोसली में भी जल्द रेडियोलॉजिस्ट व स्पेशलिस्ट चिकित्सकों की कमी को दूर किया जाएगा। मंत्री ने बताया कि सहादत नगर गांव के नर्सिंग कॉलेज में अगले साल से कक्षाएं विधिवत तौर पर शुरू कर दी जाएंगी। अभी वहां ढांचागत विकास का कार्य करवाया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्री ने विधायक अनिल यादव के भी काम की तारीफ करते हुए कहा कि वे पूरी लगन से हलका के विकास के लिए जुटे हुए हैं। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली, एसडीएम विजय कुमार यादव, जिला कृषि विपणन अधिकारी सत्य प्रकाश, मार्केट कमेटी सचिव नरेंद्र सिंह, अशोक लूखी सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

ग्यारहवां पुरस्कार (इलैक्ट्रिक कैटल-100 नग)

❖ श्री अजय कुमार सुपुत्र श्री सुंदर लाल, 1910/30, न्यू चिन्योट कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री प्रशांत सुपुत्र प्रमोद, नेहरू कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री मदन गोपाल सचदेवा सुपुत्र मुलखराज सचदेवा, म. नं. 309/16, प्रताप मोहल्ला, रोहतक ❖ जगबीर सुपुत्र श्री देशराज, गांव मोहम्मदपुर, दुलोठ जाट, अटेली, महेन्द्रगढ़ ❖ रोहित बंसल सुपुत्र श्री दीपक बंसल, वार्ड नं. 6, दीवान गेट, झज्जर ❖ जय नारायण सुपुत्र श्री दुर्गा प्रसाद, साल्हावास, झज्जर ❖ दर्शना देवी धर्मपत्नी धर्मबीर सिंह, गांव दुजाना, बेरी, झज्जर ❖ रतन लाल सुपुत्र श्री समसूराम नांगल चौधरी, महेन्द्रगढ़ ❖ श्री रामचंद्र सुपुत्र रामभगत, अमृत कॉलोनी, वार्ड 22, रोहतक ❖ श्री भगत सिंह सुपुत्र श्री बनवारी लाल, नजदीक रेलवे स्टेशन, वार्ड नं. 2, (आटा चक्की) कलानौर, रोहतक ❖ दिव्या सुपुत्री श्री परवीन, जहाजगढ़, बेरी, झज्जर ❖ सुरेश कुमार सुपुत्र श्री बलराम, साल्हावास, झज्जर ❖ निहारिका शर्मा पत्नी दीपक शर्मा निवासी 15/40, 5 बिस्वा, जटवाड़ा मोहल्ला, बहादुरगढ़ ❖ महेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री भागचन्द, दुजाना, बेरी, झज्जर ❖ महाबीर सिंह सुपुत्र श्री जागे राम, कबलान, झज्जर ❖ जिया पुत्री श्री अमित निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ शर्मिला पत्नी श्री विरेन्द्र निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ दिलबाग सिंह सुपुत्र श्री जगत सिंह, निवादा, साल्हावास, झज्जर ❖ राधे श्याम सुपुत्र स्व. श्री हजारी लाल, गांव व डा. नन्दरामपुर बांस, रेवाड़ी ❖ मदन लाल वर्मा सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद म. नं.4, गली नं. 3/1, सरस्वती विहार, कालका रोड, रेवाड़ी ❖ प्रिन्स सुपुत्र श्री अमर, मारोत, मातनहेल, झज्जर ❖ श्री रणवीर सिंह सुपुत्र श्री राम, गांव व डा. तुंबाहेड़ी, झज्जर ❖ मामन सिंह सुपुत्र श्री चन्द्रभान, गांव पलड़ा, बेरी, झज्जर ❖ दयानन्द सुपुत्र श्री मंगलराम, गांव लूखी, कोसली, रेवाड़ी ❖ धर्मवीर सिंह सुपुत्र श्री सुरजभान, नारनौल, महेन्द्रगढ़ ❖ अमन सोलंकी पुत्र श्री श्रीपाल सोलंकी, निवासी मकान नं0 2459, सेक्टर 2, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ मधुबाला पत्नी श्री जय भगवान निवासी मकान नं.840/13, गली नं.10 भगत सिंह कालोनी, बहादुरगढ़ ❖ मनोज कुमार पुत्र श्री राजेन्द्र सिंह निवासी गांव डाबौदा कलां, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ तेजबीर राठी पुत्र श्री जागेराम निवासी गांव व डाकखाना सांखौल, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ विनोद कुमार पुत्र श्री मनोहर लाल गांव व डाकखाना सांवड़, जिला चरखी दादरी ❖ रमन सुपुत्र श्री रिंकू, दगड़ौली, बाढ़ड़ा, चरखी दादरी ❖ सुनीता पत्नी मुकेश निवासी रामनगर, परनाला रोड़, गली नं.4, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ सुरेन्द्र कुमार सैन पुत्र श्री सन्जू निवासी गुजरों की ढाणी, पुराना बस स्टैंड, भिवानी ❖ श्री महेंद्र सिंह सुपुत्र खेड़ी सिंह, गांव व ड. भालौठ, रोहतक ❖ मयंक पुत्र श्री जतिन कुमार निवासी गांव हनुमान ढाणी, जिला भिवानी ❖ सुलेखा पत्नी श्री हरिओम निवासी गांव रोहद, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ श्याम करण पुत्र श्री सोनी लाल निवासी छिकारा कालोनी, गली नं.5, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ दयाराम पुत्र श्री कमलेश निवासी आर्य नगर, गली नं.2, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ देवेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री राजिन्द्र सिंह, गांव व डा. शीशवाला, दादरी ❖ समीर पुत्र श्री प्रदीप निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ उमेश पुत्र श्री हवा सिंह निवासी 12/410, सैनी पुरा, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ हवा सिंह पुत्र श्री लखीराम निवासी गांव व डाकखाना गोयला कलां, बादली, झज्जर ❖ आशीष वर्मा पुत्र श्री बलवान सिंह निवासी सुहासरा, लोहारू, जिला भिवानी ❖ श्री राकेश कुमार सुपुत्र ब्रह्मजीत सिंह, गांव व डा. बोहर, रोहतक ❖ परवीन कुमार सुपुत्र श्री दिलबाग सिंह गांव व डा. लोहारहेड़ी, बहादुरगढ़, झज्जर ❖ श्री रवि सुपुत्र हरि सिंह, 822, दरमान मौहल्ला, रोहतक ❖ हर्ष मित्तल पुत्र श्री रविन्द्र कुमार निवासी मकान नं 5, नजदीक लिबर्टी होम्स, शिव नगर कालोनी, भिवानी ❖ श्री अंकुर सुपुत्र श्री रामफल, खरक जाटान, बैंसी, तह. महम, रोहतक ❖ मोहिन्द्र सिंह सुपुत्र श्री कन्हैया लाल, गांव लोहारहेड़ी, बहादुरगढ़, झज्जर ❖ वीर भान पुत्र श्री काली चरण निवासी मकान 802/19, आर्य नगर, रोहतक

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

आवश्यक सूचना :

1. सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसम्बर 2025 से किया जाएगा।
2. पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
3. पुरस्कार संख्या 4 से 13 उपहार के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अभिकर्ता से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
4. यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय में एडवांस में जमा करनी होगी।
5. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। मूल प्रति को मिलान हेतू साथ में लाना अनिवार्य है।
6. अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बरों पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रात: 11.00 से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं :- फोन : 9253681019-20

- कार्यालय पता -

महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल, फोन : 8295738500, 9253681005

खबर संक्षेप

लिटिल चैंमप्स प्ले स्कूल में रंगारंग कार्यक्रम

नारनौल। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जयंती के उपलक्ष में लिटिल चैंप्स प्ले स्कूल मिश्रवाडा में फैंसी ड्रेस व रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी-अपनी प्रस्तुति देकर सबको भाव विभोर कर दिया। मुख्य अध्यापिका आशा मान ने कहा कि आज का दिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जयंती के उपलक्ष्य में बाल दिवस मनाया जाता है। वह बच्चों से बहुत प्यार करते थे। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में हितेश यादव, भाविक यादव, लियान मान, सैम यादव तथा एकल नृत्य प्रतियोगिता में तनवी सोनी प्रथम, पारुल सोनी द्वितीय व तृतीय आने वाली बरखा को विद्यालय की मुख्य अध्यापिका द्वारा पुरस्कृत किया गया।

बीजेआरडी सीसे स्कूल में मनाया बाल दिवस

महेंद्रगढ़। बाल दिवस पर बीजेआरडी स्कूल में भव्य आयोजन किया गया। डायरेक्टर राजपाल यादव और चेयरपर्सन शीला यादव के मार्गदर्शन में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम की शुरुआत भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण से की गई, जिससे बच्चों में उनके प्रति सम्मान की भावना जागृत हुई। इस आयोजन में बच्चों ने विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बच्चों ने चाचा नेहरू को याद किया

महेंद्रगढ़। आरआरसीएम पब्लिक कनीना में भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन के अवसर पर बाल दिवस बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। नेहरू को बच्चे प्यार से चाचा नेहरू कहते थे। विद्यालय परिसर को रंग-बिरंगे गुब्बारों और सजावट से सजाया गया। शिक्षकों ने बच्चों के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत नृत्य, हास्य नाटक और गायन ने बच्चों को खूब हंसाया और मनोरंजन किया। स्कूल द्वारा विभिन्न प्रकार के खेलों और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इन खेलों में बच्चों ने भाग लिया।

स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर देश भक्ति की भावना से सबको भाव विभोर कर दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

चौधरी रणबीर सिंह हुड्डा पार्क में 15 लाख की लागत से बनेगा शहीद स्मारक, विधायक ने किया शिलान्यास

महेंद्रगढ़। शहीद स्मारक का शिलान्यास करते हुए। फोटो : हरिभूमि

भारत-चीन युद्ध के दौरान 18 नवंबर 1962 को लड़े गए ऐतिहासिक रेजांगला युद्ध में शहीद हुए वीर सपूतों की याद में महेंद्रगढ़ में शहीद स्मारक की आधारशीला रखी गई। यह स्मारक नगर पालिका की ओर से शहर के रणवीर सिंह हुड्डा पार्क में डी-प्लान के तहत लगभग 15 लाख रुपये की लागत से बनाया जाएगा। स्मारक का शिलान्यास विधायक कंवर सिंह यादव ने क्षेत्र के पूर्व सैनिकों की मौजूदगी में रखी। अध्यक्षता संघ के संरक्षक डॉ. मेजर सूरत सिंह ने की। इस दौरान भाजपा के पूर्व मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त केविवि के वीसी टंकेश्वर कुमार, अखिल भारतवर्षीय यादव सभा महासभा के प्रदेशाध्यक्ष व रेजांगला शहीद माटी कलश यात्रा के संयोजक राव रमेश पायलट, बलवान फौजी भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह हवन के साथ किया गया। उसके बाद वीर शहीदों के सम्मान में शौर्य गाथा व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। स्कूली बच्चों ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर देश भक्ती की भावना से सबको भाव विभोर कर दिया। रेजांगल युद्ध की झलकियों की लगाई गई प्रदर्शनी ने भी लोगों को अपनी तरफ आकृषित किया। गौरतलब है कि वर्ष 2018 में रेजांगला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में तत्कालीन शिक्षामंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने रेजांगला पार्क बनाने की घोषणा की थी। हालांकि सात वर्ष बीत जाने के बाद भी नगर पालिका इस पार्क के लिए जमीन निर्धारित नहीं कर पाई थी। अब विधायक कंवर सिंह यादव के प्रयासों से नगर पालिका ने लगभग 300 गज भूमि उपलब्ध करवा दी है। रेजांगला युद्ध में भारत के 110 जवान शहीद हुए थे, जिनमें हरियाणा के 60, राजस्थान के 25, उत्तर प्रदेश के 24 और पंजाब के एक जवान शामिल थे। इनमें से महेंद्रगढ़ के 17 जवानों ने अपनी शहादत से जिले और प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया था। पूर्व सैनिक विकास संघ व सामाजिक संगठनों द्वारा वर्षों से रेजांगला के शहीदों के सम्मान में स्मारक निर्माण की मांग की जा रही थी। उनके लंबे प्रयासों के बाद अब यह सपना साकार होने जा रहा है। पूर्व सैनिकों ने इस निर्णय का स्वागत किया है और कहा है कि यह स्मारक न केवल शहीदों को श्रद्धांजलि देगा, बल्कि युवाओं में भी देशभक्ति की प्रेरणा जगाएगा। भूतपूर्व सैनिक विकास संघ के तत्वावधान में शहीद स्मारक का शिलान्यास एवं रेजांगला शौर्य दिवस समारोह में विधायक कंवर सिंह यादव ने वीर शहीदों को नमन किया। साथ ही उनकी शहादत को याद करते हुए सेना के शौर्य की भी बात कही। अध्यक्षता संघ के संरक्षक डॉ. मेजर सूरत सिंह, संघ के अध्यक्ष सूबेदार रामस्वरूप यादव ने सभी अतिथियों का आभार जताया।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर कैप्टर राजेंद्र सिंह, सुबेदार ब्रह्मदेव आर्य, हवा सिंह, रामभगत, प्रशांत कुमार, नपा प्रधान रमेश सैनी, डॉ. बीर सिंह यादव, बीएल यादव, यादव सभा के प्रधान एडवोकेट अभय राम यादव, महेंद्र सिंह देवनगर, भाजपा किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष पवन खैरवाल, जेजेपी के जिला अध्यक्ष राजकुमार खातोद, पूर्व पार्षद कुलदीप सुरजनवास, अमरजीत रिवासा समेत सैंकड़ों पूर्व सैनिक उपस्थित थे।

व्यापारियों और नागरिकों के हित में लेंगे फैसले: आरती सिंह राव

अटेली व कनीना मार्केट कमेटी चेयरमैन एवं वाइस चेयरमैन ने संभाला कार्यभार

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने नव नियुक्त चेयरमैन-वाइस चेयरमैन को कुर्सी पर बैठाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

मंडी अटेली। स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव का हल देकर सम्मान करते हुए। व कार्यभार संभालते मार्केट कमेटी के नवनियुक्त पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने शनिवार अटेली मंडी और कनीना मार्केट कमेटी के नव नियुक्त चेयरमैन व वाइस चेयरमैन को कुर्सी पर बैठाया। इस दौरान दोनों पक्षों पर आसीन राव समर्थकों ने पद व गोपनीयता की शपथ भी ली। अटेली में जहां मार्केट कमेटी के नव नियुक्त चेयरमैन दिनेश जेलदार और वाइस चेयरमैन राधेश्याम गोयल तथा सदस्यों ने विधिवत रूप से पदभार ग्रहण किया। वहीं कनीना मार्केट कमेटी के चेयरमैन जयप्रकाश कोटिया तथा वाइस चेयरमैन दीपक गुप्ता ने शपथ ली। अटेली में आयोजित समारोह में पद की सार्वजनिक हितों के प्रति समर्पण की शपथ ली गई। कार्यक्रम से पहले हवन यज्ञ किया गया। मंच संचालन पूर्व सरपंच एडवोकेट सुरेश द्वारा किया गया। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने चेयरमैन-वाइस चेयरमैन का फूलमालाओं व गुलदस्तों से स्वागत किया। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे। आरती सिंह राव ने बताया कि नए पदाधिकारी किसानों के हितों को सर्वोपरि रखते हुए मंडी क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य करेंगे। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत आपको और हम सब को अपना आशीर्वाद दिया। वहीं मुख्यमंत्री नायक सिंह सैनी आशीर्वाद रहा है, क्योंकि इसलिए हमको अटेली और कनीना में चैयरमैन मिले। विधायक एवं मंत्री बने लगभग एक वर्ष का समय हो गया है। अब शपथ ग्रहण होने के साथ ही मार्केट कमेटी के चेयरमैन, वाइस चेयरमैन और मेंबर किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए काम कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों और व्यापारियों की समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता और मंडी के विकास कार्यों को गति दी जाएगी। अंत में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने आज 16 नवंबर को नारनौल में शूरसेनी जयंती के प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम न्योता भी दिया। कोसली से विधायक अनिल यादव, जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव, गोविंद गोस्वामी, भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप बोचड़िया, पूर्व जिला अध्यक्ष दयाराम यादव, युवा नेता मनोज सेकवाल, पूर्व सरपंच गढी एडवोकेट सुरेश, कंवर सिंह कलवाड़ी, नगर पालिका चेयरमैन संजय गोयल, भाजपा नेता इंद्रजीत यादव, सोमेश यादव, अटेली भाजपा मंडल अध्यक्ष मुकेश कुमार गनियार, पंकज, बाबूलाल पटीकरा, कुलदीप कलवाड़ी, नरेश यादव, राजेश यादव सिहार, पूर्व चैयरमैन विकास आदि मौजूद रहे।

मार्केट कमेटी कनीना के पदाधिकारियों ने संभाला कार्यभार

***कनीना।** स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव की मौजूदगी में शनिवार को मार्केट कमेटी कार्यालय कनीना में आयोजित समारोह में नव-नियुक्त पदाधिकारियों ने अपना पदभार संभाला। कमेटी के चेयरमैन जयप्रकाश कोटिया तथा वाइस चेयरमैन दीपक गुप्ता ने इस सम्मान के लिए उनका अभिनंदन करते हुए आभार जताया। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि कनीना महत्वपूर्ण कृषि-व्यापार केंद्रों में से एक है। ऐसे में मार्केट कमेटी की भूमिका अहम है। उन्होंने कनीना क्षेत्र में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों और भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श किया। स्वास्थ्य मंत्री ने 16 नवंबर को नई अनाज मंडी, नारनौल में आयोजित होने वाली शूर सैनी जयंती के राज्य स्तरीय समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का न्योता भी दिया। इस मौके पर एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह अहलावत, सिविल सर्जन डॉ. अशोक कुमार, एसएमओ रेनू वर्मा, मार्केट कमेटी सचिव अजीत सिंह, जिला अध्यक्ष डॉ. यतेन्द्र राव, पंचायत समिति प्रधान जयप्रकाश ककराला, कृषि विभाग के एसडीओ डॉ. अजय यादव, भाजपा मंडल अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह, मार्केट कमेटी के पूर्व चेयरमैन कुंदन सिंह, अमरजीत चेयरमैन, संजय ब्रह्मचारी, दीपक वाशिष्ठ, आलोक गोयल, कुलदीप धनखड़, कुलदीप कुमार, सुरेंद्र सिंह आदि उपस्थित थे।*

एमएलएस डीएवी स्कूल में स्वास्थ्य जांच कैंप

नारनौल। डीएवी स्कूल में प्राचार्य राजेश कुमार के निर्देशन में सूर्या अस्पताल की ओर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रीति चौधरी व डॉ. दिव्या यादव ने अपनी टीम के साथ विद्यालय में पहुंचकर बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की। जिसके अंतर्गत बच्चों का दृष्टि परीक्षण, दंत परीक्षण, हीमोग्लोबिन परीक्षण व बीपी आदि से संबंधित जांच की गई। चिकित्सकों के द्वारा विद्यार्थियों को स्वच्छता, संतुलित भोजन, योग व नियमित व्यायाम के लिए प्रेरित किया गया। चिकित्सकों के द्वारा बच्चों को यह भी बताया गया कि एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्यक्ति की दिनचर्या का भी बहुत महत्व होता है। इसलिए आप अपना प्रत्येक कार्य समय पर करें, जिससे आप स्वस्थ व तंदरुस्त रह सके। प्राचार्य राजेश कुमार ने चिकित्सकों व उनकी टीम का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह के शिविर के आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक बनाना है।

यदुवंशी स्कूल में मनाया गया बाल दिवस

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ बाल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना से हुई। उसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें नृत्य, गीत, कविता पाठ और नाटक शामिल थे। विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया और अपने कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय परिसर में विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं, जिनमें दौड़, रस्साकस्सी, लुका-छिपी और अन्य मनोरंजक गतिविधियों ने सभी का मन मोह लिया। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

मॉडर्न स्कूल में बाल दिवस पर खेलकूद प्रतियोगिताएं

***महेंद्रगढ़।** बाल दिवस पर मॉडर्न वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोमला रोड भोजावास में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यालय में रस्साकसी, जैवलिन थो, शॉट पुट, डिस्कस थो, रिले दौड़, 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, 400 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, थ्री लैग रेस, लेमन रेस, जलेबी रेस, मेंढक दौड़, बोरी दौड़, कबड्डी, वॉलीबॉल आदि विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संस्था के निदेशक राजकुमार यादव, हवा सिंह यादव, प्रबंधन समिति की सदस्या अनीता देवी, सोनिका देवी एवं संस्था के प्राचार्य अनिल कुमार ने मां सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलित करके खेलों का शुभारंभ करवाया।*

प्रतियोगिता में बीआर ज्ञानदीप का रहा शानदार प्रदर्शन

महेंद्रगढ़। गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में कनीना में आयोजित ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय सुरजनवास के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया। कार्यक्रम के दौरान गीता श्लोक उच्चारण, भाषण प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, भजन गायन और निबंध लेखन प्रतियोगिता जैसी विविध गतिविधियां आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों और संदेशों को मंच के माध्यम से प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। विद्यालय ने गीता पाठ प्रतियोगिता में ब्लॉक स्तर पर पहला स्थान, क्विज प्रतियोगिता में दूसरा स्थान तथा भाषण प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

श्रीकृष्णा स्कूल में सीबीएसई का सेमिनार आयोजित

महेंद्रगढ़। श्रीकृष्णा स्कूल में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड उत्कृष्टता केंद्र द्वारा क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि उपप्राचार्य नीलम कुमारी एचडी सीनियर सेकेंडरी सात्हावास झज्जर व वदंना बायोलॉजी दिल्ली पब्लिक स्कूल रेवाड़ी, विशिष्ट अतिथि स्कूल चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव मुख्य रूप से उपस्थित रहे। अध्यक्षता स्कूल प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। मुख्य अतिथियों के आगमन पर स्कूल चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव व प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा बुक्का भेंटकर जोरदार स्वागत किया। सेमिनार में विद्या की देवी मां सरस्वती के सक्षम मुख्य अतिथि उपप्राचार्य नीलम कुमारी, वंदना डीपीएस व स्कूल चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर शुरुआत की।

आरपीएस खातोद में मनाया गया बाल दिवस

महेंद्रगढ़। आरपीएस विद्यालय खातोद में बाल दिवस मनाया गया। इस दौरान विद्यालय के सभी विभागों में बच्चों के लिए विविध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। खासकर मिडिल विभाग द्वारा आयोजित कुकिंग विदाउट फायर कार्यक्रम ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। करीब 200 विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन किया। इन बच्चों ने बिना आग के स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजन तैयार किए, जिन्हें देख और खाकर सभी प्रभावित हुए। ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने बच्चों की कला और कुकिंग के इस नए रूप की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के हुनर हमें जीवन में अवश्य आने चाहिए, क्योंकि यह न केवल बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, बल्कि उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न करता है। सीईओ इंजी. मनीष राव और डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने भी इस कार्यक्रम की सराहना की और बच्चों के उत्साह को देखते हुए भविष्य में ऐसे कार्यक्रम के आयोजन की बात की। प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम बच्चों में टीम वर्क, क्रिएटिविटी और आत्मविश्वास को बढ़ावा देते हैं।

एचपीएस में वार्षिक खेल महोत्सव संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। विद्यार्थियों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि। फोटो : हरिभूमि

नांगल चौधरी रोड स्थित हरियाणा पब्लिक स्कूल में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य समापन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के एमडी डॉ. हितेश वर्मा, निधि वर्मा एवं निर्देशक पुष्कर मल वर्मा ने की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एकपाद शीर्षासन योग में विश्व रिकॉर्डधारी नीरज सिंह, त्रियांग मुख एकपाद पश्चिमोत्तानासन योग में विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले प्रशांत यादव, प्रसिद्ध योगाचार्य डॉ. नीलेश मुद्गल, आर्चरी कोच सुरेंद्र शर्मा, सेंट्रल यूनिवर्सिटी हरियाणा के असिस्टेंट रजिस्ट्रार पवन कुमार तथा रिटायर्ड जिला बाल कल्याण अधिकारी विपिन शर्मा उपस्थित रहे। समारोह का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुआ। इसके उपरांत मुख्य अतिथि ने क्रिकेट मैच में बल्लेबाजी कर खेल प्रतियोगिताओं का औपचारिक शुभारंभ किया। विद्यार्थियों ने अनुशासित मार्च पास्ट प्रस्तुत कर मुख्य अतिथियों को सलामी दी। मुख्य अतिथि नीरज सिंह व प्रशांत यादव ने संबोधन में कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। खेलों में नियमित भागीदारी से विद्यार्थी अपने माता-पिता, विद्यालय तथा देश का नाम रोशन कर सकते हैं।

विद्यालय के डीपीई मनोज पूनिया ने बताया कि अंतिम दिन लड़कों एवं लड़कियों के लिए खो-खो, वॉलीबॉल, क्रिकेट, कबड्डी और रस्साकशी जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इनमें ओवरऑल प्रदर्शन में पृथ्वी सदन प्रथम रहा। इन प्रतियोगिताओं में जानवी व जतिन को बेस्ट एथलीट के खिताब से नवाजा गया। विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथियों ने प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर सम्मानित किया। संस्था के डीन मनोज भारद्वाज व प्राचार्य सुनील यादव ने कहा कि खेलकूद बच्चों को शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है। संस्था के एमडी डॉ. हितेश वर्मा, निधि वर्मा तथा निर्देशक पुष्कर मल वर्मा ने सभी विद्यार्थियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

सूरज स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं स्पोर्ट्स मीट

नारनौल। सूरज स्कूल में बाल दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातःकालीन सभा में रंगारंग प्रस्तुतियों से हुई। सभी प्रस्तुतियों ने पूरे माहौल को ऊर्जा और उत्साह से भर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने विभिन्न गीतों पर नृत्य, भाषण और कविताएं प्रस्तुत की। बच्चों की नृत्य-गतिविधियों, अभिव्यक्ति और मंच कौशल ने सभी दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का मंच संचालन शिक्षिका मंजू चौधरी व एकता गोयल ने किया। कनिष्ठ वर्ग की शिक्षिकाओं के ऊर्जावान और मनमोहक नृत्य ने छात्र-छात्राओं को मंत्र मुक्त कर दिया। भौतिक विज्ञान के व्याख्याता विजय सिंह ने एक कविता प्रस्तुत की और अपने संबोधन में छात्रों को बड़े सपने देखने और कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्पोर्ट्स मीट के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं 100 मीटर, 400 मीटर दौड़, लांग-जंप, हाई-जंप, कबड्डी, खो-खो, रस्सा-कस्सी व वॉलीबॉल आदि में बच्चों ने प्रदर्शन किया।

बेटे अनिल यादव ने दान स्वरूप 250000 रुपये, खेड़की गोशाला, 51000 रुपये बिहाली गोशाला, 51000 रुपये भोजावास गोशाला और 51000 रुपये कुक्सी मन्दिर में किए भेंट

शिक्षाविद मा. भगवान सिंह को किया याद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। स्व. भगवान सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित करती पूर्व डिप्टी स्पीकर संतोष यादव।

क्षेत्र के प्रतिष्ठित शिक्षाविद, अनुशासनप्रिय शिक्षक और समाजसेवा की मिसाल स्वर्गीय मास्टर भगवान सिंह की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर शनिवार एक विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में शिक्षा जगत से जुड़े वरिष्ठ व्यक्तियों, सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों, ग्रामीणों एवं पूर्व विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में पहुंचकर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए और उनके जीवन से जुड़ी यादों को साझा किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ हवन और पुष्पांजलि के साथ हुआ। इसके उपरांत उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने मास्टर भगवान सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। वक्ताओं ने कहा कि मास्टर भगवान सिंह जी न केवल एक आदर्श शिक्षक थे, बल्कि वे एक ऐसे शिक्षाविद थे जिनकी सोच और कार्यशैली ने असंख्य विद्यार्थियों के जीवन को नई दिशा दी। वे शिक्षा को केवल विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित न मानकर जीवन के हर क्षेत्र में उसके उपयोग और महत्व को समझाते थे। उनकी बड़ी बेटी पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष सन्तोष यादव ने भावुक होते हुए कहा कि मास्टर भगवान सिंह की सादगी, ईमानदारी और कर्मठता सदैव परिवार एवं समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

पुत्र अनिल यादव ने श्रद्धांजलि सभा में आए सभी लोगों का आभार जताया और कहा कि मास्टर जी के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए परिवार और समाज मिलकर कार्य करता रहेगा। अनिल यादव ने दान स्वरूप 250000 रुपये, खेड़की गौशाला, 51000 रुपये बिहाली गौशाला, 51000 रुपये भोजावास गौशाला और 51000 रुपये कुक्सी मन्दिर में भेंट किए गए। कार्यक्रम के अंत में दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

खिलाड़ी मेहनत, लगन व उचित मार्गदर्शन से पा सकते हैं नई ऊंचाइयां : पवन

महेंद्रगढ़। डुलाना चितलांग रोड स्थित एसपीजी आईएएस स्कूल में चल रही दो दिवसीय खेल प्रतियोगिताओं का समापन हुआ। प्रतियोगिता में बच्चों ने अपना उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया। कोच श्रवण कुमार ने बताया कि स्कूल में खो-खो, कबड्डी, कुश्ती, लॉन्ग जंप, लेमन रेस, फ्रॉग रेस, बैलून रेस आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर पर सिटी एसएचओ पवन कुमार मौजूद रहे। इससे पहले कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्यातिथि डीएसपी दिनेश कुमार ने किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि इन खिलाड़ियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मेहनत, लगन और सही मार्गदर्शन से ग्रामीण स्कूलों के बच्चे भी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना सकते हैं। चेयरमैन डॉ. विरेंद्र राव ने बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों के अंदर अनुशासन, आत्मविश्वास व खेल भावना को प्रोत्साहित करती हैं। उन्होंने प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 16 नवंबर 2025

विशेषः अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 19 नवंबर

पुरुषों को परिवार का पालक, कमाने वाला और हर दबाव सहन कर लेने वाला लौह मनुष्य समझा जाता है। सदियों से चली आ रही यह मान्यता आज भी बरकरार है। इस वजह से वे अनेक तरह की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करने को विवश हैं। ऐसे में जरूरत है कि न केवल समाज बल्कि स्वयं पुरुष भी इन दबावों से मुक्त होने का प्रयास करें।

दबावों-अपेक्षाओं-चुनौतियों से
विवश दुनिया भर के पुरुष

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

अनुमान के मुताबिक दुनिया में लगभग 4.14 अरब पुरुषों की आबादी है, जो विश्व आबादी की लगभग 50.27 फीसदी है। दुनिया के हर समाज में चाहे वो अफ्रीकन कबीलाई समाज हो, चाहे यूरोप का आधुनिक समाज हो, चाहे भारत और चीन जैसे पारंपरिक सभ्यताओं वाला समाज हो या अमेरिका का अत्याधुनिक बाजारू वर्चस्व वाला समाज हो। सभी समाजों में पुरुषों की मजबूती का मिथ सदियों से व्याप्त है। इस कारण आज के इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुष वर्ग अनेक मानसिक, शारीरिक और आर्थिक परेशानियों के दुष्चक्र में फंसा हुआ है। दरअसल, दुनिया के हर समाज में चाहे पूरब हो या पश्चिम, पुरुषों को लेकर यह मिथ बहुत गहरे तक मौजूद है कि वे मजबूती, भावनात्मक निरपेक्षता के धनी होते हैं यानी पुरुष होने का मतलब हमेशा कठिन परिस्थितियों में भी भावनाओं पर पूरा नियंत्रण रखने वाला होता है। सच्चाई यह है कि इस मान्यता की वजह से पुरुष अनेक दबावों और परेशानियों के साथ जीने के लिए मजबूर होते जा रहे हैं।

बढ़ रही स्वास्थ्य समस्याएं

पुरुष हर हाल में मजबूत बने रहते हैं, कभी भावनाओं में नहीं बहते। इस मिथ पर खरे उतरने के लिए दुनिया के 70 फीसदी से ज्यादा पुरुष अपनी समस्याएं, खासकर शारीरिक समस्याएं किसी और को बताते ही नहीं हैं। इस वजह से उनमें शारीरिक समस्याएं बढ़ती हैं। दुनिया भर के स्वास्थ्य आंकड़े बताते हैं कि अपने स्वास्थ्य के चेकअप को लेकर पुरुष बेहद लापरवाह होते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा हार्ट अटैक पुरुषों को होता है और माना जाता है कि करीब 50 फीसदी पुरुषों को पहले से पता होता है कि वो इसकी चपेट में हैं, लेकिन इसका जिक्र कभी नहीं करते। वास्तव में इन मिथों ने पुरुषों की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को आज तक के इतिहास में सबसे खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज भी ज्यादातर पुरुष स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण चेकअप कराने से कन्नी काट जाते हैं। यही कारण है कि पुरुषों की ज्यादातर गंभीर बीमारियां समय रहते पकड़ में नहीं आतीं और यह आंकड़ा तो दुनिया में हर कोई जानता है कि हर देश में पुरुष महिलाओं के मुकाबले कम से कम 7-8 साल कम जीते हैं।

नहीं करते भावनाएं अभिव्यक्त

हैरानी की बात यह है कि इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुषों से वैसी ही भावनात्मक उम्मीदें की जाती हैं, जैसे मध्ययुग में की जाती थीं कि वे अपनी परेशानियों का रोना नहीं रोएंगे। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया के करीब 60 फीसदी से ज्यादा पुरुष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध विच्छेद का दंश झेलते हैं। क्योंकि वे अपनी भावनाओं और निर्भरताओं का सामाजिक रूप से प्रदर्शन नहीं कर पाते। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में फंस जाने के बाद न केवल वे अपने दोस्त खो देते हैं बल्कि पारिवारिक अलगाव की सजा भी पुरुषों को ही मिलती है।

नहीं दिखना चाहते इमोशनली वीक

आज जब एआई, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भरमार है, तब भी यह देखना चिंताजनक है कि ज्यादातर पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अकसर छिपे रहते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया के अधिकांश देशों में पुरुषों द्वारा किए गए आत्महत्या के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। मगर हैरानी की बात यह है कि करीब 40 फीसदी आत्महत्या करने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने वाले पुरुष इस बात का बिना खुलासा किए यह कदम उठा लेते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? दरअसल, पुरुषों की यह समस्या है कि वे अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते, प्राचीन काल से आज तक यह स्थिति जैसे की तैसे ही बनी हुई हैं। आज भी पुरुषों को उसी नजरिए से देखा जाता है, उनसे वही अपेक्षा की जाती है। विडंबना यह है कि हर पुरुष खुद को भी उसी मिथक की नजर से देखता है। इसीलिए दुनिया का हर पुरुष भावनात्मक रूप से कमजोर होने के बाद भी इस बात से डरता है कि उसे दूसरा कोई कमजोर न समझे।

कम नहीं वर्क-इकोनॉमिकल प्रेशर

इस डिजिटल युग में समस्या सिर्फ भावनात्मक नहीं है। इस दौर की एक बड़ी समस्या यह भी है कि काम-काज की डिजिटल संस्कृति ने पुरुषों का लाइफ बैलेंस बिल्कुल बिगाड़कर रख दिया है। पिछली एक सदी से बराबरी के नारों के बीच भी दुनिया के हर समाज में आज भी पुरुषों से उम्मीद यही की जाती है कि घर में कमाने की जिम्मेदारी उन्हीं की है। सोशल मीडिया द्वारा भले पुरुषों की अनेक काल्पनिक छवियां प्रस्तुत की जाती हों, लेकिन विश्व के श्रम पर नजर रखने वाले संगठन बताते हैं कि अभी भी जीडीपी ओ रि एं टे ड तकरीबन 70 फीसदी काम दुनिया के पुरुष ही करते हैं और आज जबकि ज्यादातर मामलों में मशीन पुरुषों से बेहतर है, अब भी पुरुष इस दबाव में जीते हैं कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं या नहीं। कहीं मैं दूसरे से पीछे तो नहीं रह जाऊंगा। इस वजह से वे ओवर वर्कप्रेशर में रहते हैं।

समाज-स्वयं पुरुष बदलें नजरिया

विश्व पुरुष दिवस के अवसर पर जरूरत है कि पुरुषों की स्वास्थ्य जागरूकता और विशेषकर उनके मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति पर खुलकर बोलने और स्वीकार करने का माहौल बने। पुरुषों को बदलती तकनीकी और सामाजिक जीवन में नई वास्तविकताओं को स्वीकार करना चाहिए। इस बात की भी जरूरत है कि पुरुषों को ज्यादा से ज्यादा संवाद मंच और मानसिक स्वास्थ्य चेकअप प्लेटफॉर्म पर लाया जाए। उन्हें परिवार का साथ और संबल मिले। पुरुष स्वयं को आयरन मैन न समझें। अपने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। तभी वे स्वस्थ-खुशहाल जीवन जी पाएंगे। *

भारतीय पुरुषों की चुनौतियां

इस एआई और ग्लोबलाइजेशन के दौर में भारत में पुरुषों की औसत जीवन प्रत्याशा महिलाओं के मुकाबले करीब 08 साल कम है। सिर्फ उम्र के मामले में ही नहीं, पैदा होने के बाद सर्वाइव करने के मामले में भी पुरुष महिलाओं से पीछे हैं तथा हर साल बीमारियों से मरने वाले में पुरुषों और महिलाओं में 12 से 14 फीसदी का फर्क है। 2021 के रिपोर्ट में दर्ज नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ऑफ इंडिया के आंकड़ों के मुताबिक देश में 72.5 फीसदी आत्महत्याएं पुरुषों द्वारा की जाती हैं। 40 फीसदी पुरुष इस दौर में भी अपनी मानसिक स्वास्थ्य की समस्या को परिवार से छिपाते हैं और 2017 के एक आंकड़े के मुताबिक अलग-अलग रैंडम स्वास्थ्य पड़ताल में पाया गया था कि करीब 1.97 करोड़ पुरुष किसी न किसी तरह की मानसिक समस्या से ग्रस्त थे।

सवाल है आखिर इस खुलेपन के दौर में भी पुरुष खुद को लेकर इस तरह के बंद के शिकार क्यों हैं? तो विशेषज्ञों के मुताबिक भारत में पुरुषों पर आज भी वो पारंपरिक अपेक्षाएं बनी हुई हैं जो कृषि युग से उन पर रही हैं। मसलन आज भी पुरुष को परिवार का पालक, कमाने वाला और दबाव सहन कर लेने वाला लौह पुरुष समझा जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस डिजिटल मीडिया और प्रतिस्पर्धा के युग में पुरुष उपेक्षा का शिकार हो गए हैं और इस दौर में उनकी मानसिक असुरक्षा का सबसे बड़ा कारण रोजगार पर लटकती एआई की तलवार है।

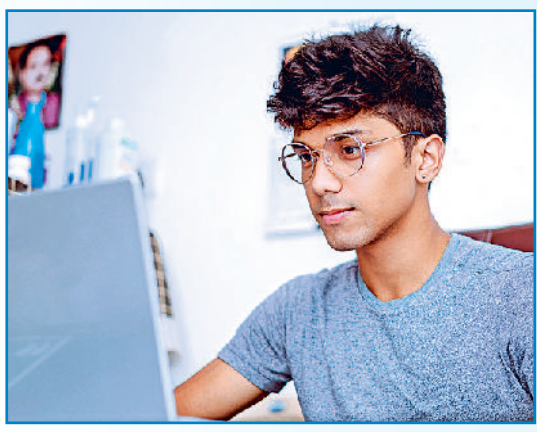

नई सदी के पहले दशक यानी 2010 के बाद जन्मी पीढ़ी (जनरेशन अल्फा), बेशुमार तकनीकी सुविधाओं, कई चुनौतियों और अनेक दुविधाओं के साथ बड़ी हो रही है। ऐसे में उनका सहज, सही दिशा में विकास हो इसके लिए उन्हें थामने, संभालने और संबल देने की भी जरूरत है।

जनरेशन अल्फा मन-जीवन को थामने-संबल देने की दरकार

लाइफस्टाइल
डॉ. मोनिका शर्मा

समय बदलने के साथ पीढ़ियां बदलती हैं और पीढ़ियों के साथ जमाने के रंग भी बदल जाते हैं। हर नई जनरेशन, पुरानी जनरेशन की तुलना में नए रंग-ढंग को जीती ही है। समय के साथ बच्चों की जीवनशैली से जुड़ा हर बदलाव सहज स्वीकार्य नहीं होता। इसे समझना और एक संतुलन साधना जरूरी है। हाल के वर्षों में अल्फा जनरेशन की जीवनशैली से जुड़े बदलाव बेहद विचारणीय हो चले हैं। तकनीक की दस्तक ने परिवर्तन की गति ना सिर्फ कई गुना बढ़ा दी है बल्कि बहुत से नए पहलू भी जोड़ दिए है। ऐसे में जनरेशन अल्फा को संभालने के लिए पैरेंट्स को सजग रहने की जरूरत है।

क्या है जनरेशन अल्फा: वर्ष 2010 से 2024 के बीच जन्मी पीढ़ी को जनरेशन अल्फा कहा जाता है। डिजिटल संसार में आंखें खोलने वाली यह पीढ़ी जनरेशन जेड की अगली पीढ़ी है। गौरतलब है कि 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोगों को जनरेशन जेड कहा जाता है। अल्फा पीढ़ी, ग्लोबल माइंडेड और आजाद खयाल है। साथ ही जेन अल्फा की सीखने-समझने की क्षमता और अंदाज दोनों ही अलग हैं। इस पीढ़ी को जन्म के समय से ही तकनीक ने घेरा हुआ है। डिजिटल दुनिया में कुशल नेविगेटर कही जाने वाली यह पीढ़ी, जागरूक और इनोवेटिव विचारों की धनी भी है। अपने अधिकारों को लेकर सजग है। अच्छी एडॉप्टिबिलिटी रखती है।

तकनीक का सही इस्तेमाल जरूरी: जनरेशन अल्फा को एक डिजिटल नेटिव माना जाता है। जन्म से ही कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन, टैबलेट, इंटरनेट और दूसरे डिजिटल डिवाइसेस इनके जीवन का हिस्सा रहे हैं। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में बड़ी हो रही अल्फा जनरेशन के मन और जीवन को थामने के लिए टेक्निकल गैजेट्स के सीधे इस्तेमाल की सीख देना आवश्यक है। लंबा समय स्क्रीन के सामने बिता रही अल्फा जनरेशन को डील करने के लिए पैरेंट्स इन्हें सामाजिक जीवन से जोड़ें। डिजिटल दुनिया में रील्स, पोस्ट्स, मीम्स देखते रहने वाली अल्फा पीढ़ी को अपने असली रिश्तों-नातों से मिलवाएं। पर्व-त्योहारों पर परंपरागत जीवन का पाठ पढ़ाएं। तकनीक को सहूलियत के बजाय लत न बनने दें। क्लिक भर में हर काम हो जाने के आदी न होने दें। खुद अपने काम करने दें। चिंतनीय है कि तकनीकी जाल में उलझे ये बच्चे, कई मोर्चों पर दिशाहीनता का शिकार भी हो जाते हैं। यही वजह है कि इस हाइटेक पीढ़ी को डील करने के लिए कुछ मामलों में असीम धैर्य की भी दरकार है, तो कई बातों को लेकर स्पष्ट गाइडलाइंस बनाना भी जरूरी हैं। बड़ों का साथ और स्नेह, जेन अल्फा को भी सहज जीवन से जोड़े रखेगा।

नियमित संवाद जरूरी: चैट-जीपीटी से सलाह लेने वाली इस जनरेशन से हर समस्या को लेकर नियमित संवाद किया जाना चाहिए। साथ ही इन बच्चों को सेल्फ कंट्रोल सिखाना भी बहुत जरूरी है। अनुशासित जीवनशैली न केवल स्मार्ट स्क्रीन से दूर रखेगी बल्कि जीवन को वास्तविक धरातल पर जीना भी सिखाएगी। इन बच्चों को स्मार्ट गैजेट्स के इस्तेमाल से पूरी तरह दूर नहीं रखा जा सकता। मानसिक रूप से मजबूत और सजग पीढ़ी पर किसी भी तरह का दबाव डालने के बजाय हर मामले में कोई बेहतर ऑप्शन सुझाएं। रचनात्मक सोच को बढ़ावा दें। इंडोर गेम्स हों या दूसरी फिजिकल एक्टिविटीज, पैरेंट्स इस टेक सेवी पीढ़ी को सार्थक व्यस्तता का माहौल दें।

भावनात्मक मोर्चे पर डटें: बात चाहे असल और आभासी व्यक्तित्व का फर्क समझाने की हो या सामाजिक-पारिवारिक जीवन से जोड़ने की, पैरेंट्स अल्फा पीढ़ी को इमोशनल फ्रंट पर अवश्य थामें। एडिटेड फोटोज, फॉलोअर्स और वर्चुअल स्टारडम की आभासी दुनिया में खोए बच्चों का मन समझने का प्रयास करना जरूरी है। सोशल लाइफ से लगभग दूर हो चुकी अल्फा पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेल-जोल के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रही है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इन बच्चों को स्क्रीन स्क्रॉलिंग के बजाय साथ बैठकर बात करने का महत्व समझाएं। वर्चुअल संसार में गुम होकर अकेलेपन और अवसाद के घेरे में आने से बचाने के लिए सॉफ्ट स्किल्स सिखाने पर फोकस करें। व्यावहारिक मोर्चे पर स्क्रीन स्क्रॉलिंग ने इन्हें जरूरत और इच्छा का अंतर समझने का माहौल ही नहीं दिया। अभिभावक इनकी मनचाही चीजें उपलब्ध करवाने और हर मांग पूरी करने से भी बचें। इस पीढ़ी के बच्चों के पास हर तरह की सूचनाएं और जानकारियां भी पहुंच रही हैं। ऐसे में अभिभावक उनके सवालों पर ध्यान दें। डांटने-डपटने और चुप रहने की हिदायत देने के बजाय मन से बच्चों के विचार सुनकर ही उनको सपोर्ट किया जा सकता है। पैरेंट्स तकनीक से भरपूर वातावरण में परवरिश पाती अल्फा जनरेशन में, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव का भाव जगाएं। मशीनों के बीच पलती इस पीढ़ी के मन की संवेदनाओं को बचाना, आज पैरेंट्स की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। *

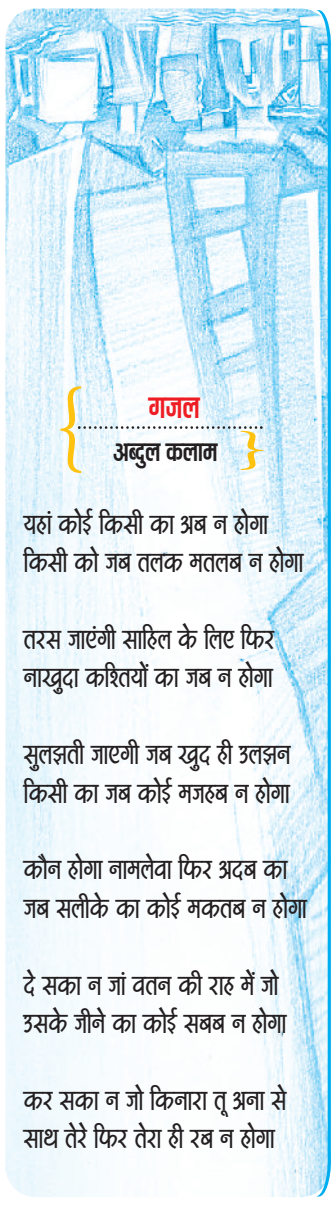

व्यंग्य
डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

रौब जमाती मूंछें!

अभी एक रोज सुबह-सुबह पार्क में टहलते समय मित्रों के संग मूंछों पर बहस चली तो हर कोई अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए मूंछों के पुराण पर चर्चा करने लगा। वकील साहब मथुरा जी अपनी सीनियर सिटीजन वाली करीने से कटी सफेद मूंछों पर हाथ फेरते हुए बोले, 'मैंने जब से मूंछों को बढ़ाया फिर रख-रखाव बेहतर तरीके से करने लगा, तो हर कोई मेरी मूंछों को देखकर मूंछों के बारे में चर्चा करने लगा। हर कोई कहने लगा है कि अब हमें मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी की जगह मूंछें हों तो मथुरा लाल वकील साहब जैसी कहना पड़ेगा। इस पर मैं फूला नहीं समाता और मूंछों पर हाथ फेरते हुए मूंछों को और सम्मान देने लगा हूं।' कुछ पल गर्वीली मुस्कान बिखेरने के बाद वह पुनः बोले, 'जब से मैंने मूंछें बढ़ाईं, उनको सहेजा तो बहस के मुद्दों के दौरान उस पर हाथ फेरते रहने से कई क्लाइंट के मुकदमे जीत लिए। कोर्ट में हर कोई मुझको देखने के पहले मेरी मूंछें देखता। जब-जब नए क्लाइंट आते तो कहते मेरे वकील साहब तो मूंछों वाले हैं! जिनको देखकर ही सामने वालों के मुकदमे की मूंछें नीची हो जाती हैं।'

इस पर सुनील भैया बोले, 'हमारे गांव में भी जब भी मान-सम्मान की बात होती है, लोग कहते हैं मूंछ का सवाल है। फिल्म में तो मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी बात प्रचलन में आई। लेकिन हर गांव में मूंछों पर ताव देने वाले मिलते हैं। गांव के एक बुजुर्ग तो मूंछों पर ताव देने के कारण ताऊजी कहलाने लगे हैं।'

इस पर बात-बात में मूंछों पर ताव देने वाले रमन सिंह बोले, 'अरे मूंछें आन-बान और शान होती हैं। मूंछें कोई भी रख ले, लेकिन उन्हें मेंटेन करना आसान नहीं होता है। मूंछें भी फर्क और फख्र वाली होती हैं। अमीर सरमाएदार की मूंछें मर्दानगी, स्वाभिमान, वीरता, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और अधिकार को प्रकट करने वाली मानी जाती हैं। इसीलिए छोटे, गरीब आदमी पहले तो मूंछें रख ही नहीं सकता और यदि कोई रखता भी है तो इसलिए कि वक्त जरूरत पड़ने पर मूंछें नीचे करके जान की अमान पा जाए।'

इस पर रामनिवास जी बोले, 'आपको पता नहीं जब कोई अपना रौब अपनी वाणी, कार्यशाली से नहीं जमा पाता है तो उसकी मूंछें रौब जमा देती हैं। अरे, अच्छे से अच्छा पहलवान क्यों ना हो, अखाड़े में उतरने से पहले मूंछ पर ताव जरूर देता है, फिर दांव खेलता है। मूंछें व्यक्ति की बॉडी लैंग्वेज भी होती हैं। ताव देने वाली मूंछें, डाई के जरिए सफेद से काली की गई मूंछें, खड़ी-आड़ी मूंछें, लंबी मूंछें, लकीरों वाली मूंछें, होंठों के ऊपर जेलर टाइप आदि-आदि तरह की मूंछों से व्यक्ति की पर्सनालिटी का पता चलता है।' इस पर ज्ञान बघारने कमल जी बोले, 'मूंछों को सहलाने से, हाथ फेरने से दिमाग में तरह-तरह की नई सोच और आइडिया आते हैं। मूंछें समस्या को हल भी करती हैं तो कई स्थान पर प्रॉब्लम भी क्रिएट करती हैं। मूंछें व्यक्ति की पहचान होती हैं। मूंछों की प्रकृति आकार के आधार पर लोगों को जाना जाता है। कुछ मूंछमुंडे भी होते हैं, जिन्हें अपनी पहचान किसी अन्य तरीके से बनानी पड़ती है और इसके लिए काफी जतन करने पड़ते हैं।' जब मूंछों पर इतनी बहस चल रही थी तो प्रोफेसर साहब बोले, 'मूंछों का आकार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाता है तो कई बार मूंछों पर ताव देना भारी भी पड़ जाता है और मूंछों पर ताव देने वाले का दांव खाली चला जाता है। मूंछ कटे को नाक कटा भी लोग मानते हैं, लेकिन हकीकत में मूंछें मर्दों का श्रृंगार होती हैं, रौबदार, पानीदार, बट और बल वाली मूंछों से लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं।' मूंछों पर चली बहस से ही मॉर्निंग वॉक का जब समय खत्म होने वाला था, तब रामनिवास जी बोले, 'मूंछों के भी भाव होते हैं, मूंछ और ताव का गठजोड़ होता है। बगैर मूंछों के ताव के मुकाबले कोई ताव, ताव नहीं होता है, लेकिन जब अपमान का घूंट पीना पड़ता है तो मूंछें नीचे हुई मानी जाती हैं। जब खाने-पीने की चीजों में मूंछें डूबने लगती हैं तो उसे आलसी और अजीबो-गरीब माना जाता है। ऐंठने वाली मूंछें जब तनी हुई रहती हैं तब पूरा फेस हर मोर्चे को फेस करने के लिए तैयार रहता है।' वे आगे बोले, 'कटी मूंछें, तनी मूंछे, राजसी मूंछ, फनी मूंछ, झुकी मूंछ, फुकी मूंछ, फेक मूंछ भांति-भांति के मूंछों पर किसी शायर ने कहा है, हमारी मूंछ का आलम यह है कि ताव हम देते हैं, घाव दुनिया पर पड़ता है। इसलिए मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी वरना न हों।' *

गजल
अब्दुल कलाम

यहां कोई किसी का अब न होगा
किसी को जब तलक मतलब न होगा

तरस जाएंगी साहिल के लिए फिर
नाखुदा कश्तियों का जब न होगा

सुलझती जाएगी जब खुद ही उलझन
किसी का जब कोई मजहब न होगा

कौन होगा नामलेवा फिर अदब का
जब सलीके का कोई मकतब न होगा

दे सका न जां वतन की राह में जो
उसके जीने का कोई सबब न होगा

कर सका न जो किनारा तू अना से
साथ तेरे फिर तेरा ही रब न होगा

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

भाई से बड़ा

आज गोपाल की आंखें नम थीं। उसके साथ जो हुआ, कभी वह सोच भी नहीं सकता था। छोटे भाई साजन को अपनी ससुराल जाना था। वहां कोई धार्मिक अनुष्ठान था। निमंत्रण पत्र गोपाल के पास भी आया था। साजन के पास बड़ी गाड़ी थी। गोपाल ने उससे पूछा, 'साजन तुझे ससुराल जाना है न शाम को?'

'हां भैया, जाना है।' साजन ने जवाब दिया। गोपाल ने कहा, 'साजन मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।' 'यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको जरूर ले चलूंगा।' साजन ने भरोसा दिया।

गोपाल ने जाने की पूरी तैयारी कर ली। बस इंतजार था साजन के बुलाने का। गोपाल ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'अरे बेटा, देखकर तो आ, तेरा चाचा मुझे लेने क्यों नहीं आया? समय तो हो चुका है।'

'जी पिताजी।' कहकर बेटा चाचा के घर चला गया। वहां से लौटकर बताया, 'पिताजी, चाचा जी तो निकल गए, घर पर ताला लगा हुआ है और गाड़ी भी नहीं है वहां।' गोपाल का मन भारी हो गया। उसने तुरंत फोन किया, 'साजन कहां है तू?'

'भैया मैं तो निकल गया ससुराल के लिए।' साजन ने जवाब दिया। 'मुझे तो तेरे साथ चलना था और तूने हामी भी भरी थी।' गोपाल बोला। 'हां भैया...पर बात ऐसी थी कि...।' वह बोलता-बोलता रुक गया। 'कैसी बात थी भाई?' गोपाल ने पूछा। 'गाड़ी में एक सीट आगे की खाली थी, लेकिन मुझे ओरियो को ले जाना पड़ा।' साजन हकलाते हुए बोला। 'ओरियो...ये ओरियो कौन है?' गोपाल ने आश्चर्य से पूछा। 'भैया, ओरियो मेरे डॉगी का नाम है।' साजन ने बताया।

'क्या डॉगी को बैठाने के लिए तूने बड़े भाई को छोड़ दिया... भाई से बड़ा तेरा डॉगी हो गया।' कहकर गोपाल ने तुरंत फोन काट दिया। *

पुस्तक: शोर एवं अन्य कविताएं (कविता संग्रह) रचनाकार: मनोज मोहन, मूल्य:200 रु, प्रकाशक: संतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

चुप्पियों का शोर

कई वर्षों से साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय मनोज मोहन का पहला कविता संग्रह 'शोर एवं अन्य कविताएं' हाल में ही छपकर आया है। मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द खर्च करके बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विद्रूप और मनुष्यता के समक्ष उपस्थित संकटों को साफ तौर पर लक्षित किया जा सकता है। *'मैं चाहता हूं होना/सामान्य व्यक्ति/जिसे सहज जीवन मिले।'* (सामान्य व्यक्ति) और *'चलो हम एक किताब बनाएं/जहां तुम दिखो खुश-खुश/मैं रहूं उदास-उदास।'* (चलो हम एक किताब बनाएं) जैसी पंक्तियां अपनी साधारणता में भी असाधारण भावार्थ प्रकट करती हैं। ये कविताएं हमें वैचारिकता का एक नया प्रस्थान बिंदु प्रदान करती हैं। कुछ कविताओं को घर, तुम और महामारी खंडों में भी संकलित किया गया है। *

गोवा को आमतौर पर शानदार सी बीचेज वाले स्थल, हनीमून और मस्ती भरे टूरिस्ट डेस्टिनेशन के तौर पर जाना जाता है। लेकिन गोवा में ऐसे कई लोकेशंस भी हैं, जो हमें इतिहास और संस्कृति से रूबरू कराते हैं। जानिए, गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही ऑफबीट टूरिस्ट प्लेसेस के बारे में।

टूरिस्ट स्पॉट
बुशरा फातमा

इतिहास-संस्कृति से रूबरू कराते गोवा के ये अनोखे पर्यटन स्थल

कुर्डी गांव

रिवोना केव

हालांकि भारत के लगभग हर राज्य में ऐसे स्थल मौजूद हैं, ऐसी ढेरों कहानियां और किस्से सुनने-पढ़ने को मिल जाएंगे, जिसमें उस स्थान और अपने देश से जुड़े गौरवशाली इतिहास का ब्यौरा मिलता है। गोवा में भी ऐसे कई कम चर्चित स्थल मौजूद हैं। खूबसूरत सी बीचेज के लिए दुनिया भर में फेमस गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही लोकेशंस के बारे में आपको बता रहे हैं, जहां इतिहास और संस्कृति का मिला-जुला संगम देखने को मिलता है।

बुड़बुड़ ताली

साउथ गोवा के नेत्रवाली में एक अनोखा तालाब मौजूद है, जिसे बुड़बुड़ ताली या बबल लेक के नाम से जाना जाता है। करीब 400 साल पुराना यह तालाब गोपीनाथ मंदिर के प्रांगण में मौजूद है, जहां सिर्फ ताली बजाने या किसी तेज आवाज से ही तालाब के नीचे से पानी के ऊपर की तरफ बुलबुले बनने लगते हैं। यहां के स्थानीय लोगों में इस तालाब को लेकर बहुत श्रद्धा है। हालांकि साइंटिस्ट्स इस प्रभाव के लिए किसी रासायनिक क्रिया और गैस को जिम्मेदार मानते हैं। कुदरत के करिश्मे वाले इस अनोखे तालाब को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

उसगलीमल शिलालेख

साउथ गोवा के उसगलीमल गांव में मौजूद यह शिलालेख, करीबन 4 हजार से 6 हजार साल पुराना है। सालों तक इस गांव से बहती कुशावती नदी की गोद में छुपे ये शिलालेख लोगों की नजरों से दूर थे। 1993 में जब गांव वालों की नजर नदी के किनारे पत्थरों पर अलग-अलग आकृतियों पर पड़ी तो उन्होंने पुरातत्व विभाग को खबर दी। पता चला ये हजारों साल पहले, शायद मध्य पाषाण युग का समय था, जब इंसान अपने आस-पास की चीजों को देखकर उसकी आकृति पत्थरों पर उकेरा करता था। इन आकृतियों में जानवर, तरह-तरह के रास्ते और पैरों के निशान देखने को मिलते हैं। अगर आप इतिहास और पुरातात्विक अवशेषों में रुचि रखते हैं, तो गोवा के इस जगह पर आपको जरूर जाना चाहिए। घने जंगल और कुशावती नदी का यह हिस्सा आपका मन मोह लेगा।

कुर्डी गांव

सन 1960 तक सांगेम तालुका नामक स्थान पर मौजूद कुर्डी गांव एक अच्छा-खासा बसा-बसाया गांव हुआ करता था। हिंदू, मुस्लिम और कैथलिक समुदाय की समृद्ध आबादी यहां निवास करती थी। सन 1960 में जब साउथ गोवा को ज्यादा मात्रा में पानी मुहैया करवाने के लिए सलौलिम डैम बनाने का प्रस्ताव आया तो सबसे पहले कुर्डी गांव को खाली करवाया गया। ये पूरा गांव पानी के अंदर समा गया ताकि डैम का पानी सुचारू रूप से बह सके। मई महीने में जब पानी का स्तर कम होता है तब गांव का कुछ हिस्सा पानी के बाहर दिखाई देता है। वे लोग, जो अपना घर बार छोड़कर दूसरी जगह बस गए वो मई महीने में यहां आकर अपनी पुरानी यादों को ताजा करते हैं। हर साल तीनों समुदाय के लोग यहां आकर अपने-अपने धार्मिक जगहों की स्मृति में उत्सव मानते हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में पर्यटक भी यहां जुटते हैं।

रिवोना केव

साउथ गोवा में स्थित रिवोना केव यानी रिवोना गुफाओं को उस दौर का ऐतिहासिक स्थल माना जाता है, जब गोवा में मानव समुदाय की बस्ती बसनी शुरू ही हुई थी। माना जाता है कि इस जगह पर उस समय के बुद्धिमान लोग ही आकर बसते थे। मान्यता है कि यहां बौद्ध धर्म के अनुयायी भी रहा करते थे। 7वीं शताब्दी की इन गुफाओं को देखने के लिए यहां देश-विदेश से काफी पर्यटक आते हैं। *

इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी करते हैं बदलते मौसम की तैयारी

हम इंसान तो तकनीकों के जरिए मौसम में आने वाले बदलावों का पता लगाकर उसके हिसाब से अपनी तैयारी करते हैं। लेकिन प्रकृति ने कई पशु-पक्षियों को ऐसी क्षमता नैसर्गिक रूप से प्रदान की है। ऐसे ही कुछ जंतुओं के बारे में जानिए।

रोचक / अपराजिता

पशु-पक्षी भले इंसानों की तरह तेज दिमाग के न होते हों, लेकिन इंसानों की ही तरह आने वाले मौसम की दुश्वारियों से बचने के लिए अपने स्तर पर वे भी बाकायदा योजनाबद्ध ढंग से तैयारी करते हैं। जिस तरह मौसम बदलने से पहले इंसान गर्म कपड़ों, छत की मरम्मत या पंखे, कूलर आदि को दुरुस्त कर लेते हैं, उसी तरह धरती के दूसरे पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की चुनौतियों के लिए अपनी ही सूझबूझ और योजनाबद्धता से तैयारी करते हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि इंसानों के विपरीत ये पशु-पक्षी ऐसी तैयारियां बिना किताबें पढ़े, बिना मौसम विभाग की चेतावनी सुने ही करते हैं। क्योंकि इनके पास न रेडियो होता है, न प्रकृति की गतिविधियों की सूचना देने वाला इनके लिए कोई जरिया होता है। दरअसल, खुद कुदरत ने ही इन्हें अनुमान लगाने की अद्भुत क्षमता दी है, ये उसी के आधार पर अपने सहज ज्ञान और जैविक अनुभव प्रवृत्तियों के जरिए मौसम की बदलती करवटों के लिए महीनों पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं।

कोयल की कूक का संकेतः भारत के ग्रामीण परिवेश में बहुत सारी जानकारियों को अखबारों, रेडियो या किताबों से नहीं, पशु-पक्षी की गतिविधियां देखकर जानी, समझी जाती हैं। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुर स्वर आ गया है, तो इसका मतलब यह है कि वह बदलते तापमान के प्रभाव में अपने प्रजनन चक्र को समायोजित करने की कोशिश में है। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुरता है, तो पतझड़ निकट है, क्योंकि मार्च, अप्रैल में जब पेड़ों पर नई कोपलें फूटती हैं, उसी समय कोयल, कौवे के घोंसले में चुपके से अंडे दे देती है, इसे विषय के जानकार लोग 'ब्रूड पैरासिटिज्म' कहते हैं यानी जब तपती गर्मी आए, तो उसके बच्चे किसी अन्य पक्षी की देखभाल में सुरक्षित पलें। कहने का मतलब यह है कि कोयल खुद मौसम की कठिनाइयों को समझकर पहले से ही अपनी अगली पीढ़ी की सुरक्षा सुनिश्चित कर लेती है।

हाथी बताता है जल का स्रोतः हाथी एक ऐसा पशु है, जो भारत में मानसून और सूखे दोनों का बहुत सटीक तरीके से अंदाजा लगा लेता है। सूखा पड़ने से पहले वह झुंड बनाकर लंबी यात्राएं शुरू कर देता है और उस ओर बढ़ता है, जहां जलस्रोत होते हैं। राजस्थान और मध्य भारत के जंगलों में हाथियों का यह जलप्रवास, वर्षों पुराने जलस्रोतों की उनकी स्मृतियों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वे भूमि की नमी, पौधों के मुरझाने और हवा की गंध से पानी की कमी का किसी भी वैज्ञानिक डिवाइस से ज्यादा सटीक अनुमान लगा लेते हैं।

अबाबील देती है मानसून का संदेशः इस छोटी-सी चिड़िया को भारत में मानसून की संदेशवाहक भी कहते हैं। दरअसल, अबाबील, हजारों किलोमीटर दूर अफ्रीका या दक्षिण भारत से उड़कर गर्म और आर्द्र इलाकों में आती है।

वैज्ञानिकों ने सालों निगरानी के बाद यह पाया है कि अबाबील पक्षी केवल भोजन की तलाश के लिए प्रवास नहीं करती। इसके इस प्रवासन चक्र में मौसम जनित सुरक्षा की भी योजना छिपी होती है। जब उत्तर भारत में सर्दी बढ़ती है और कीट-पतंगे बेहद कम हो जाते हैं, तब यह अबाबील दक्षिण भारत की ओर उड़ जाती है और जैसे ही गर्मियां लौटती हैं, यह भी अपने पुराने घर की ओर लौट आती हैं। ग्रामीण भारत में लोग अबाबील देखकर अनुमान लगाते हैं कि अब बारिश बस आने ही वाली है। वास्तव में यह पक्षी वातावरण के दबाव और आर्द्रता के सूक्ष्म बदलाव को बहुत बारीकी से महसूस कर लेती है।

इस तरह देखें तो इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की दुश्वारियों से खुद को बचाने के लिए अपने ज्ञान, पूर्वानुमान और कठोर अनुशासन का इस्तेमाल करते हैं। *

जल संचित कर लेते हैं ऊंट

ऊंट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है, क्योंकि वह रेगिस्तान में दूसरे किसी भी वाहन से ज्यादा बेहतर और सहजता से रह लेता है। लेकिन ऊंट सिर्फ रेगिस्तान के बारे में ही इतनी सटीकता से नहीं जानता बल्कि वह रेगिस्तान के सबसे कठोर मौसम में जीवित रहने की कला भी भलीभांति जानता है। यही वजह है कि जब राजस्थान में गर्मी अपने चरम पर होती है, तो वह न केवल अपने शरीर में पानी की खपत को नियंत्रित कर लेता है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से उसका शरीर पानी को पुनःअवशोषित करने की क्षमता भी रखता है। इसी के चलते वह कई दिनों तक बिना पानी पीए भी रह लेता है, लेकिन यही ऊंट मानसूनी संकेत मिलने पर जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी पीता है। अपने शरीर में एक वाटर रिजर्व भी बना लेता है। वास्तव में यह उसकी छठी इंद्री का मौसम प्रबंधन है, जो रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में उसके जीवन को संभव बनाता है।

अवेयरनेस
शिखर चंद जैन

घर में सुविधायुक्त टॉयलेट, हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए भी बहुत जरूरी है। वर्ल्ड टॉयलेट-डे, 19 नवंबर पर बता रहे हैं इससे जुड़ी कुछ रोचक बातें।

सभी के लिए है जरूरी स्वच्छ-सुविधायुक्त टॉयलेट

हर साल 19 नवंबर को वर्ल्ड टॉयलेट डे यानी विश्व शौचालय दिवस मनाया जाता है। आप सोच रहे होंगे कि भला शौचालय के लिए भी कोई दिन मनाने की क्या जरूरत है! आपको बता दें कि भले ही आपके घर में सुविधायुक्त शौचालय है, लेकिन दुनिया में आज भी करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके पास सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय नहीं हैं। विश्व शौचालय संगठन द्वारा एकत्रित आंकड़ों के अनुसार, विश्व में लगभग एक अरब लोग आज भी खुले में शौच करते हैं। ऐसे में यह दिन हमें यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि शौचालय हमारे स्वास्थ्य, सम्मान और पर्यावरण के लिए कितना जरूरी है।

विश्व शौचालय दिवस का इतिहासः विश्व शौचालय दिवस की शुरुआत 2001 में हुई थी। स्वास्थ्य और जन सरोकार विशेषज्ञों की सलाह पर स्वच्छता के मुद्दों पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व शौचालय संगठन की स्थापना की गई। वर्षों की अंतरराष्ट्रीय बहस और सिफारिश के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने 2013 में आधिकारिक तौर पर विश्व शौचालय दिवस को वार्षिक आयोजन के रूप में घोषित किया। यह दिवस 2030 तक सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

बुनियादी जरूरत है शौचालयः इस वर्ष विश्व शौचालय दिवस की थीम 'बदलती दुनिया में स्वच्छता' और स्लोगन है 'हमें हमेशा शौचालय की आवश्यकता होगी'। इस साल की थीम और स्लोगन का मुख्य संदेश यह है कि चाहे दुनिया कितनी भी बदल जाए, जितनी भी नई तकनीकें आ जाएं, हम चाहे कितने ही एडवांस हो जाएं, शौचालय की जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। यह कोई लग्जरी नहीं बल्कि एक बुनियादी जरूरत है। हर घर में शौचालय होना तो आवश्यक है ही। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम शौचालय का इस्तेमाल करते समय और उसके बाद कुछ बातों का ध्यान रखें।

फ्लश करते समय रखें ध्यानः टॉयलेट में फ्लश हमेशा ढक्कन लगाकर करें क्योंकि टॉयलेट फ्लश आपके टॉयलेट से छह फीट की ऊंचाई तक कीटाणुओं को बाहर निकाल सकता है। हर बार जब आप टॉयलेट फ्लश करते हैं, तो कीटाणु हवा में उड़ जाते हैं और आपके बाथरूम में घूमकर आपके टॉयलेट के आस-पास की जगहों और वस्तुओं जैसे-टूथब्रश, साबुन आदि पर भी पहुंच सकते हैं। अगर आपके टॉयलेट सीट में ढक्कन नहीं है, तो टॉयलेट फ्लश करने के बाद तुरंत बाहर निकल जाएं।

हाथ अच्छे से धोएंः टॉयलेट यूज करने के बाद बहुत अच्छी तरह से हाथ धोना जरूरी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग 20 प्रतिशत लोग शौचालय जाने के बाद अपने हाथ नहीं धोते। जो लोग धोते भी हैं, उनमें से केवल 30 प्रतिशत ही साबुन का इस्तेमाल करते हैं, जबकि बाथरूम के कीटाणुओं को मारने के लिए साबुन से लगभग 15 से 20 सेकेंड तक अच्छी तरह हाथ धोने की सलाह दी जाती है। निराशाजनक बात यह है कि केवल 5 प्रतिशत लोग ही 15 सेकेंड या उससे ज्यादा समय तक हाथ धोते हैं।

टॉयलेट पेपर का हो सीमित इस्तेमालः टॉयलेट पेपर का आवश्यकतानुसार सीमित उपयोग करने की आदत डालनी चाहिए। इसे एक्स्ट्रा वेस्ट करने से बचना चाहिए। एक चौंकाने वाला तथ्य यह है कि अमेरिकी प्रति वर्ष 433 मिलियन मील टॉयलेट पेपर का उपयोग करते हैं, जो पृथ्वी से सूर्य तक जाने और वापस आने की सम्मिलित दूरी के बराबर है।

शौचालय में स्मार्टफोन है खतरनाकः लगभग 75 प्रतिशत स्मार्टफोन धारक शौचालय में अपने फोन का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें टेक्स्ट मैसेज भेजना, फोन कॉल करना, वेब सर्फिंग और ऑनलाइन शापिंग शामिल है। यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक आदत तो है ही, अगर फोन टॉयलेट में गिर जाए तो यह जेब पर भी भारी पड़ सकता है। मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाले लोग अधिक देर तक शौचालय में बैठे रहते हैं, क्योंकि उनका ध्यान फोन पर रहता है। शौचालय की सीट पर लंबे समय तक बैठने से पाइल्स हो सकता है।

पब्लिक टॉयलेट के इस्तेमाल में बरतें सावधानीः व्यापक सर्वे और अध्ययन के बेस पर विशेषज्ञों का मानना है कि अगर आप किसी सार्वजनिक शौचालय में सबसे साफ शौचालय का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो पंक्ति में सबसे पहले वाले शौचालय कक्ष (जो दरवाजे या सिंक के सबसे पास हो) का ही इस्तेमाल करें। यह आमतौर पर सबसे कम यूज किया जाता है और इसलिए तुलनात्मक रूप से अधिक साफ होता है।

सबसे गंदा स्थान नहीं है टॉयलेटः आपको यह जानकार हैरानी होगी कि औसत रसोईघर के चॉपिंग बोर्ड पर शौचालय की सीट की तुलना में लगभग 200 प्रतिशत अधिक बैक्टीरिया होते हैं। इससे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि स्मार्टफोन में टॉयलेट हैंडल की तुलना में लगभग 20 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। एक औसत डेस्क पर एक औसत शौचालय सीट की तुलना में 400 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। *

सबसे महंगा टॉयलेट

अमेरिकन स्पेस एजेंसी नासा ने हाल ही में स्पेस शटल के लिए एक सक्शन टॉयलेट डिजाइन करने पर 23.4 मिलियन डॉलर खर्च किए हैं, जो 850 लीटर वायु प्रवाह प्रति मिनट की सक्शन तकनीक के साथ शून्य गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देगा। यह दुनिया का अब तक को सबसे महंगा टॉयलेट है।

सिने ट्रेंड
कैलाश सिंह

शादी, बॉलीवुड फिल्मों का एक सदाबहार विषय रहा है। शादी पर केंद्रित एवं इसके इर्द-गिर्द फिल्में और गाने बॉलीवुड में बनते रहे हैं। इनमें से कई फिल्में और गाने सुपर-डुपर हिट रहे। इन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। विवाह-केंद्रित ऐसी ही कुछ बेहतरीन फिल्मों और गानों पर एक नजर...

हिंदी फिल्मों में खूब दिखी है शादी-ब्याह की बहुरंगी छटा

'हम आपके हैं कौन' में सलमान-माधुरी दीक्षित

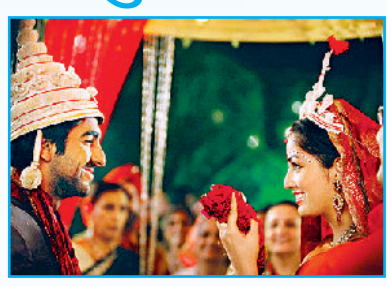
'विकी डोनर' में आयुष्मान के साथ यामी गौतम

भारतीय समाज में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर वर्ग और समाज में शादी समारोह का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। शायद यही वजह है कि बॉलीवुड की कई फिल्मों की कहानियों के केंद्र में भी शादी समारोह को रखा गया है। चाहे वह परंपरागत अरेंज मैरिज हो, लव मैरिज हो, भागकर की गई शादी हो, अमीर-गरीब के बीच शादी हो, अंतर-जातीय या अंतर-धार्मिक विवाह हो या दो अलग-अलग संस्कृति या भाषा से संबंधित लोगों की शादी हो।

वेडिंग एलबम जैसी 'हम आपके हैं कौन': साल 1994 में रिलीज फिल्म 'हम आपके हैं कौन' वेडिंग फंक्शन पर केंद्रित एक बेहतरीन फिल्म है। फिल्म के केंद्र में यूं तो प्रेम (सलमान खान) और निशा (माधुरी दीक्षित) की लव स्टोरी, अपने परिवार के लिए त्याग की भावना है। लेकिन यह वास्तव में अभिभावकों द्वारा तय किए गए परंपरागत हिंदू विवाह का प्रभावी ढंग से तैयार किए गए शादी के वीडियो एलबम की तरह है। फिल्म में दो दोस्त जब बहुत दिनों बाद मिलते हैं, तो आपस में अपने बच्चों की शादी कराने का निश्चय करते हैं और फिर एक परंपरागत विवाह का सिलसिला आरंभ हो जाता है। लड़के और लड़की की मुलाकात घर से बाहर अलग स्थान पर कराई जाती है। वे एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। फिर उनकी सगाई होती है और बाद में लड़के वाले बारात लेकर कन्या पक्ष के घर पहुंचते हैं। फिल्म में जूते चुराने के रस्म से लेकर शादी से संबंधित अनेक रस्मो-रिवाज को खूबसूरती से दिखाया गया है। जूते चुराने की रस्म पर केंद्रित गाना 'जूते दे दो पैसे ले लो' फिल्माया गया है। इसके अलावा भी फिल्म में कई सिचुएशंस पर बेहतरीन गीत पिरोए गए हैं।

'मेरे महबूब' में राजेंद्र कुमार-साधना

परंपरागत विवाह पर बनी फिल्मेंः देखा जाए तो उत्तर भारत में परंपरागत हिंदू विवाह और परंपरागत मुस्लिम शादी में कोई विशेष अंतर नहीं है। यहां शादी में फेरों की जगह काजी को बुलाकर निकाह पढ़वाया जाता है। मां-बाप द्वारा रिश्ता तय करना, सगाई, बारात, जूते चुराई, विदाई जैसी कई रस्में हिंदू और मुस्लिम समाज की शादियों में समान रूप से देखी जा सकती हैं। 'बहू बेगम', 'मेरे हुजूर', 'मेरे महबूब' आदि फिल्मों में शादी की इन रस्मों को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। बी.आर. चोपड़ा ने तो अपनी फिल्म 'निकाह' में शादी के साथ-साथ तीन तलाक जैसे संवेदनशील मुद्दे को भी उठाया है।

पंजाबी-एनआरआई परिवार की 'मानसून वेडिंग': मीरा नायर की 2001 में आई फिल्म 'मानसून वेडिंग', दिल्ली के एक पंजाबी परिवार में शादी के आयोजन और इस दौरान होने वाले उथल-पुथल पर केंद्रित है। फिल्म में ललित वर्मा और उनकी पत्नी पिम्मी अपनी बेटी अदिति की शादी एक एनआरआई हेमंत राय से तय करते हैं। जैसा कि भारतीय समाज में अकसर होता है, इस प्रकार के विवाह में एक बार पूरा विस्तृत परिवार दुनिया भर से आकर एक जगह एकत्र हो जाता है और अपने साथ अपना भावनात्मक अतीत भी लेकर आता है। शादी की तैयारियों के बीच पारिवारिक चुगलियां, राजनीति, साजिशें, हंसी-मजाक, मौज-मस्ती आदि सब कुछ चल रहा होता है और नए प्रेम समीकरण भी विकसित होते हैं। फिल्म को इतनी खूबसूरती से बुना गया है कि 'मानसून वेडिंग' हर किसी को अपने ही परिवार की शादी जैसी लगने लगती है।

इंटरकल्चरल मैरिज पर आधारित 'विक्की डोनर': सुजीत सरकार की 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'विक्की डोनर' में दो अलग-अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखने वाले जोड़े के विवाह को दिखाया गया है। फिल्म में विक्रम उर्फ विक्की (आयुष्मान खुराना) का ताल्लुक पंजाबी अरोड़ा परिवार से होता है, जबकि अशिमा रॉय (यामी गौतम) बंगाली होती है। संतानहीन परिवारों को मोटी रकम के बदले में अपना स्पर्म डोनेट करने वाला विक्की और तलाकशुदा बैंक कर्मचारी अशिमा एक-दूसरे से शादी करना चाहते हैं, लेकिन सांस्कृतिक भिन्नता के कारण दोनों को ही अपने-अपने परिवारों से विरोध का सामना करना पड़ता है। आखिरकार सब कुछ ठीक हो जाता है।

इनमें भी दिखे शादी के अलग-अलग रंगः 'हम दिल दे चुके सनम' फिल्म में गुजराती शादियों को उनके पारंपरिक रूप में दिखाया गया है। 'हम साथ साथ हैं' में शादी और पारिवारिक रिश्ते को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया गया है। आजकल की कई फिल्मों में विवाह को प्रेम, करियर और पहचान के संघर्षों की पृष्ठभूमि में दिखाया गया है, जैसे 'वीरे दी वेडिंग' फिल्म में। 'बैंड बाजा बारात' जैसी फिल्में शादी की योजना और आयोजन को नाटकीय अंदाज में प्रदर्शित करती हैं, जिनमें वेन्यू प्रबंधक, दूल्हा-दुल्हन के परिवार के साथ मिलकर तैयारी करते हैं। *

पॉपुलर हुए विदाई के ये गीत

शादी के बाद दुल्हन की विदाई का वक्त कुछ ऐसा होता है, जब मिलन और जुदाई, खुशी और आंसू एक साथ एक ही समय व्यक्त हो रहे होते हैं। हिंदी फिल्मों में विदाई के सिचुएशन पर अनेक गीत बने हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'छोड़ बाबुल का घर, मोहे पी के नगर आज जाना पड़ा' (बाबुल), 'खुशी-खुशी कर दो विदा, तुम्हारी बेटी राज करेगी' (अनोखी रात), 'बाबुल की दुआएं लेती जा' (नील कमल) आदि कई ऐसे सदाबहार विदाई के गीत हैं, जो आज भी हिंदी पट्टी की शादियों में विदाई के समय खासतौर से बजाए जाते हैं।